

[Year  
]

सीढ़ी दर सीढ़ी उर्फ तुक्के पर तुक्का



Rang Vidushak  
Theatre Group  
[Pick the date]





ल्यु बाओरुई द्वारा संकलित चीनी लोक कथा संग्रह “ चायनीज़ कामिक टेलस ” में  
संकलित लोक कथा “ श्री प्रमोशन इन सक्सेशन ” पर आधारित नाटक

### तुक्के पर तुक्का उर्फ सीढ़ी दर सीढ़ी

लेखक : राजेश जोशी एवं बंसी कौल  
गीत : बंसी कौल, राजेश जोशी, जीवनलाल वर्मा ' विद्रोही '  
निर्देशक : बंसी कौल

संगीत की धुन पर मनचलों का एक के पीछे एक प्रवेश। तुक्के मनचलों के कंधे पर बैठा है ।

गाना धा धा धा धातिद धा धा धा, धागे तिरकिट धातिद धा ।  
धा तिरकिट तक किट तक धातिद धातिद धा धा धा ॥  
तिरकिट धा धा धा, धागे तिरकिट धातिद धा ।  
किडनग तातिरकिट तक धा तिरकिट तक धा ॥  
धातिर किटतक धा तिरकिट तक धा धा धा ।  
धागे तिरकिट धिन्ना गिन्ना, धागे तूना कत्ता ।  
धागे तिरकिट धिन्न किडदा धिन्ना ।  
धागे तिरकिट धिन्ना, धातिद धातिद धातिद धातिद धा ।

पंक्ति मंच पर घूमती है । आखिरी मनचला पूरी पंक्ति को पीछे खींचता है । पूरी पंक्ति सर्प की तरह घूमती हुई पीछे जाती है सभी फिर तुक्के को नीचे गिरा कर पतंग लूटने का अभिनय करते हुए उसके उपर से निकलते हुए मंच के एक कोने में चले जाते हैं । वहाँ से वापस आकर गाना गाते हैं।

गाना कट गई कट गई हाय, कट कट गई हाय.....  
दूधारिया गई हाय....दूधारिया गई हाय  
चांद तारा गई हाय, चांद तारा गई हाय  
गिलहरिया गई हाय....लहरिया गई हाय....कचकुल्ला गई हाय....  
गई...गई, वो गई, वो गई, गई  
सूना सूना आसमों, हाय....सूना सूना आसमों हाय  
गई...गई...गई  
पतंग भी गई और उधर बिया भी गई

तुक्कू हमारी पतंगे कट – कट के न जाने कहाँ चली जाती हैं .....हाय हाय  
सभी मनचले प्रस्थान करते हैं ।

तुक्कू यह भी कोई किस्मत हुई । अपनी जिन्दगी अपनी न हुई अल्ला मियों की गाय हो गई । जिधर मर्जी हो उधर होंक दो । सुबह हुई तो अब्बा जान गुराने लगे कि अबे नालायक इबादत का वक्त हो गया । इबादत करके घर लौटो तो अम्मीजान घर सर पे उठा लेंगी, कि मियों घर का सौदा सुलुफ तो ला दो, अब घर में इतने सारे मुसटण्डे हैं...वो किस मर्ज की दवा है ?..... साले सब हराम की रोटियां तोड़ रहे हैं बैठ कर...सुबह सुबह कितना अच्छा लगता है । जब मैं मेमनों को खुली हवा में कुलांचे मारता हुआ देखता हूँ ...परिन्दों को आसमान में आजादी से उड़ता हुआ देखता हूँ.....काश अल्ला मियों ने कोई चौपाया या परिन्दा ही बना दिया होता .... कम से कम आजादी तो होती धूमने फिरने की ...न खाने की फिक्र न नहाने धोने का झंझट ... दोस्तों के साथ घूमों तो अब्बा मियों की इज्जत खतरों में पड़ जाती है । फरमातें हैं, कि लोग देखेंगे कि चौधरी साहब का जवान बेटा इन चरकटों के साथ गली में कूदकड़िये भरता घूमता रहता है...पतंग उड़ाने पहुँचों तो आसपास वालों की बेपर्दगी का खतरा ।

मनचलें हवा में उड़ कर आने का अभिनय करते हुए मंच के मध्य तक आते हैं फिर दौड़ कर मंच के बाहर निकल जाते हैं ।

तुक्कू अब इन लुच्चों लफंगों के साथ नहीं घूमू तो क्या करूं...आसपास इन कस्बों में कोई मेरा जैसा जागीरदार भी तो नहीं है कि उससे या उसके बच्चों से दोस्ती गाँठू ....दिल बहलाने के लिये इन टुटपूजियों के साथ घूमू तो मुश्किल । उधर मौलवी साहब हमेंशा अलग इज्जत का पंचनामा बनाने पर तुले रहते हैं । कहते हैं कि पढ़ो लिखो....कल खुद ही कह रहे थे कि अकबर ने क्या किस्मत पाई थी । बेपढ़ा लिखा था और इतना बड़ा बादशाह बन गया....तैमूरलंग चरवाहा था । लोगों ने पकड़कर बादशाह बना दिया....अब देखियें उस भिश्ती को, एक दिन हुमायूँ की जान क्या बचा दी...दिल्ली के तख्त पर बैठ गया....क्या किस्मत थी उन लोगों की...अपने साथ यह सब क्यों नहीं होता...अब भला बताईए कि इस सब का तालीम से क्या वास्ता...अरे क्या फायदा कमबख्त तवारीख, फलस्फा और जुगराफिया पढ़ने का...मैंने तो कभी नहीं देखा कि हिसाब के एक दो सवाल कर के किसी का पेट भर गया हो ..या फलस्फा सुन कर मरता हुआ इंसान वापस उठ खड़ा हो गया हो ....

मनचले संगीत की धुन पर एक के पीछे एक एक दूसरे की कमर पकड़ कर प्रवेश ।

गाना तुक्कु मिया, तुक्कु मियाँ,  
तुक्कु मियाँ हो, तुक्कु मियाँ हो ।  
तुक्कु मियाँ हो, तुक्कु मियाँ हो ।।

मनचले सुनिये, सुनिये सुनिये सुनिये तो जनाब...

मनचला 2 अरे सुनिये तो हमारी बात ।

तुक्कू अरे क्या सुनूं तुम्हारी बात...किस्मत पर तो पड़ी है

मनचले गधे की लात ।

मनचला 1 अरे हुजूर गधे की क्या बिसात ।

मनचला 3 हाँ मियाँ, गधे की क्या बिसात ?

मनचला अरे हुजूर यह तो एक मसला हो गया ।

तुक्कु मसला हो गया, अजीब मसला है कि मसला क्या है ।

तुक्कू अजीब मसला है कि मसला क्या है । अरे मियाँ यह तो गालिब की बहर हो गई । कि अजीब मसला है कि मसला क्या है...मनचलों के पास आकर....लेकिन मियाँ आप लोग यहाँ तशरीफ क्यों लाये हैं ।

मनचला अरे हुजूर एक मसला अटक गया है ।

तुक्कु कैसा मसला ? कहाँ है मसला ? उपर मसला । नीचे मसला । मसले का हल, मसले का हल, मसले का हल हम खोजेंगे, हम खोजेंगे, हम खोजेंगे, बस

मनचले मियाँ कहा न कि एक मसला फंस गया है ।

तुक्कु मियाँ हमें बताईए कहाँ है मसला...मनचलों की भीड़ में घुसता है । सभी इधर उधर लौट लगाते हैं ।

मनचला मियाँ वो जो अपने चुन्नु मियाँ हैं न

तुक्कू कौन चुन्नु.... चुन्नु चवन्नी या चुन्नु चाकूबाज ।

मनचला अपने साथियों से....मियाँ यह तो बड़ा आड़ा तिरछा हो रिया है । अरे वो अपने चुन्नु चवन्नी ।

तुक्कू हूँ ।

मनचले उनके घर के सामने एक बड़ा सा गढड़ा हो गया है । अब रात बिरात मवेशियों को लेकर उधर से गुजरो तो उनके गढड़े में गिर जाने का खतरा ।

मनचला 4 फंस गया है ।

तुक्कु अरे आप लोग तो कमाल करते हैं । कमाल करते हैं आप लोग भी । ऐसे सड़े सड़े मसले लेआते हैं हल कराने । अब ले ही आये हैं तो हल भी सुन लो ।

- तुक्कू सोचता हुआ दूसरे कोने में जाता है फिर वापस आकर ...मियाँ वो चुन्नू है न, उसके घर के सामने कौन रहता है
- मलचले अन्नू अठन्नी ।
- तुक्कू तो एक काम कीजिये....अन्नू के घर के सामने भी एक गढडा खोद दिजीये । और उसमें जो मिटटी निकलें उस से चुन्नू के घर के सामने का गढडा भर दिजीयेगा ।
- मनचला गुड गुड ....वैरीगुड, तो हम ऐसा ही करते हैं मियाँ...विचित्र सी चालों में प्रस्थान वैरीगुड ।
- तुक्कू देखा आपने ...दरअसल इनकों इसलिये फुटाना पड़ा कि हमने अपनी बिया को मिलने का वक्त दे रखा है...पर बिया है कि चक्कर पर चक्कर दिये जा रही है । हमारी बिया को भी यही जगह मिली थी मिलने को...अब तलक नहीं आई...अब हैरान परेशान सी आयेंगी और आते ही कोई मसला रख देंगी ।
- बिया का परेशानी की हालत में मंच पर प्रवेश**
- तुक्कू लो मियाँ देखा आपने देखा, आ गई...बिया इतनी हैरान परेशान क्यों घूम रही है ।
- मशूका मियाँ फिर वही परेशानी...ताला लगा कर चाबी फिर कहीं रख दी
- तुक्कू कितनी बार कहा है कि ताला लगा कर चाबी घर के अंदर रखा कीजिये ।
- माशुका तो फिर घर के अंदर कैसे जायेंगे ।
- तुक्कू पीछे का दरवाजा खुला रखा कीजियेगा ।
- माशुका तो ठीक है मियाँ ....हम जाकर यही करते हैं । **बिया का प्रस्थान**
- तुक्कू मसले तो हम दुनियाँ भर के यूँ ही हल करते रहते हैं ....मगर क्या करें...बेपढ़े लिखे हैं, अंगूठाछाप.....जरा से पढ़े लिखे होते तो शान से जाकर बिया के दरवाजे पर खड़े हो जाते..... तो झक मारकर तालीमयाफता को लड़की देते .....पर साला यहाँ आलिम बनना तो दूर पहला सिपारा तलक नहीं पड़ा....वो तो शुक्र है कि नोटों पर तस्वीरें बनी होती है....मियाँ यह रियासत वाले भी बड़े सयाने होते हैं, बड़ा दरख्त यानि की खजूर छाप....अवाम समझ गई कि सौ रूप्ये ...और छोटी छोटी सी गेहूँ की बालिया यानि की कलदार...विंग्स से आवाजें आती हैं....तुक्कू मियाँ तुक्कू मिया ।...दर्शकों से....नेकबख्तों को यहाँ का भी पता चल गया....नेकबख्त सूंघते हुए यहाँ तक भी पहुच गये.....
- सभी मनचलों का प्रवेश.....सभी तुक्कू मियाँ को मंच पर खोज रहे हैं**
- मनचला 1 तुक्कु मियाँ, तुक्कु मियाँ, अरे खुशबू आ रही है ।
- समूह किधर से ?
- मनचला 1 तुक्कु मियाँ, तुक्कु मियाँ, अरे खुशबू आ रही है ।
- समूह किधर से ?
- मनचला 1 अरे, अरे तुक्कू मियाँ तो वो रहे ।
- तुक्के देखा आप लोगों ने, सूंघते सूंघते यहाँ तलक पहुँच गये । देखकर परेशानी का अभिनय करता है हाय, हाय मेरे सर पर आसमान फटा जाता है ....
- लकलके तुक्के के पास जाकर आसमान की मजाल....
- खफखफे तुक्के के पास जाकर हां जनाब क्या मजाल कि आपके सर फट जाय तुक्कू को उठाकर समूह की और बढ़ते है
- लिफाफे इस जमीं को हुक्म दे कि ये आपके कदमों में सट जाये
- तीनों मिलकर तुक्कू को समूह के उपर गिरा देते हैं । समूह पुनः उन्हें उपर उठाता है ।
- गाना देखों ये उड़ रहे हैं । हाँ तुक्कु उड़ रहे हैं । देखों ये उड़ रहे हैं ।
- मनचले जनाब सितारे आपकी ओर मुड़ रहे हैं ।
- गाना देखों यह उड़ रहे हैं । देखों यह उड़ रहे है । हाँ तुक्कु उड़ रहे हैं । हाँ तुक्कु उड़ रहे हैं । देखों यह उड़ रहे हैं । देखों यह उड़ रहे है । हाँ तुक्कु उड़ रहे हैं । हाँ तुक्कु उड़ रहे हैं ।

तुक्कू ओह....हमारी किस्मत का क्या होने वाला है ?

मनचला 2 हुजूर की अक्ल का दिवाला पिटने वाला है ।

लकलके किस्मत में जनाब की उजाला होने वाला है ।

तुक्कू ऐसा दूसरे कोने की तरफ जाकर तो हम क्या किसी नुजुमी को, किसी ज्योतिषी को अपना हाथ दिखायेंगे ।

लिफाफे तुक्कू के पीछे जाकर जरूर हुजूर...सितारे आपकी झोली में चले आयेंगे

तुक्कू तो मियाँ यहीं बैठ कर हमारा इन्तजार करना ... हम अभी आते हैं । अब इन्हें काम पर भी लगाना पड़ेगा....मियाँ तब तलक आप क्या करेंगे,

मनचले कंचे खेलेंगे ।

तुक्कू कंचे नहीं ..... फाईटिंग की प्रेक्टिस करना, कीजिये फाईट, करते रहिये...दर्शकों से ...फालतू है न...देखना घण्टों इसी में लगे रहेंगे । तुक्कू का प्रस्थान

लकलके उनको जाते हुए देखकर मंच के एक कोने पर जाकर मियाँ क्या सोचते हो ? वो जायेगा, किसी नुजुमी के पास ?

लिफाफे उसके पास जाकर अरे मियाँ अपने का क्या करना ?

लकलके मेरे कहने का मतलब है, कि अगर उसे नुजुमी ने कही ये बता दिया, कि तुम्हारे सभी साथी एक नंबर के मक्कार लालची और फरेबी हैं तो हम सब के लेने के देने पड़ जायेंगे ।

खफखफे मियाँ अब उन्हें बाद में देखना....पहले ये देखिये कि शायर क्या कह रिया है ।

सभी इरशाद...इरशाद

खफखफे तो शायर कहता है ।

अजीब लुत्फ कुछ आपस की छेड़छाड़ में है ।

कहां मिलाप में वो बात जो बिगाड़ में है ।

लिफाफे मियाँ बनाना बिगाड़ना बाद में मुझे तो लगता है तुक्कू मियाँ अपने को डमा दे गये ।

खफखफे लो मियाँ इस पर भी एक शेर—

सभी इरशाद....इरशाद

खफखफे डमे पे डमा दिया जा रिया है, न कोई आरिया है न कोई जारिया है ।

सभी वाह...वाह....वाह .... ।

लकलके मियाँ वो नुजुमी के पास सचमुच न चला जाये ?

लकलके तुम से मतलब, कहता हुआ उसे धक्का देता है

लिफाफे मतलब है तभी तो कह रहा हूँ बे ।

खफखफे आस्तीने चढ़ाते हुए आगे बढ़कर बे...हम से बे...क्यों बे ?

लकलके अबे तू क्या कर लेगा बे ।

एक लड़का बीच में आकर बीच बचात करने की मुद्रा में

उसके बाद सभी साथी उसे धरती पर पटक कर उसके उपर पांव रख कर खड़े हो जाते हैं और आपस में लड़ने लगते हैं ।

लारा लारा लप्पो लात घूँसा मार । लारा लारा लप्पो लात घूँसा मार ।

लारा लारा लप्पो लात घूँसा मार । लारा लारा लप्पो लात घूँसा मार ।

तुक्कू का प्रवेश

तुक्कू क्यों मियाँ ऐसे फाईट होती है ।

कोरस तो कैसे होती है ?

- तुक्कु ऐसे होती है । सभी को मारने का अभिनय करता है । पूरा कोरस स्टेज पर बिखर जाता है । दर्शकों से मियाँ देखा आपने ?.....खफखफे देखना तो वक्त क्या हुआ है ?
- खफखफे मत पूछो भाई मियाँ...वक्त बहुत बुरा है भाई भाई का नहीं रहा..... ।
- लिफाफे ससुर जमाई का नहीं रिया, बकरा कसाई का नहीं रिया ।
- सभी और ...हलवा हलवाई का नहीं रिया....कहकर अंतिम संवाद पूरा करते करते कुत्ते की तरह आवाज निकालने लगते हैं । तुक्कू उन्हें गुस्से से देखता है ।
- तुक्कू अबे चुप्प...। जो पाले उस पर मत भौंको । सब चुप होकर सीधे खड़े जो जाते हैं, उसे देखकर हां ऐसे...नहीं अच्छा बाहर हो जाइये आप लोग....और सुनिय इसे चौक पर टंगवा दीजियेगा । चलिये....खफखफे, आप भैंसों को नहलवा लाईए।
- खफखफे चलिये ।
- तुक्कू अबे भैंसों को नहलाने का बोला है, पाड़े को नहीं ।
- तुक्कू उलझ कर ठीक है...ठीक है...बैठ जाइये । हम इन बेगैरतों के चक्कर में हम आपने खास मेहमानों को भी भूल गये दर्शकों की तरफ देखकर अस्सलामालिकुम...आदाब अर्ज है...। हां तो जनाब, मेहरबान, कद्रदान आप सब आ ही गये । आप आये हमारे घर खुदा की कुदरत... वगैरह...वगैरह...आज की शाम आने का शुक्रिया. मुखासर यह है कि जो किस्सा हम यहां बयान करने वाले हैं वो मुझ नाशुके का ही है....अच्छा इसी मिलने की खुशी में कुछ हो जाये गाना वाना...आओ भाई सब सब आते हैं
- कोरस ऐसा हुआ संजोग हा,  
ऐसा हुआ संजोग हां हां इक रूक्का चल गया  
तीर सारे रहे गये तीर सारे रह गये, इक तुक्का चल गया  
चल गया रे चल गया हॉ  
चल गये रे चल गया हां—हा इक तुक्का चल गया  
ऐसा हुआ संजोग हां, इक रूक्का चल गया— 2  
तीर सारे रह गये एक तुक्का चल गया  
चल गया रे चल गया हा, चल गया रे चल गया हॉ हॉ  
एक तुक्का चल गया ।
- गायक एक थे तुक्कू मियां और उनके सौ झमेले  
बाप दादों की कमाई के थे वो वारिस अकेले ।
- समूह हां वारिस अकेले  
न जाने किस नुजुमी ने बताया उन्हें भैया एक दिन  
आला अफसर तुम बनोगे देख लेना एक दिन  
फिर तो किस्मत ने दिखाया खेल ऐसा एक दिन  
जोर मारा यूँ मुकददर ने कि रूक्का चल गया
- तुक्कू हाय ।
- माशुका हट ।
- कोरस हाये हाये इक्के पर हुक्म के— 2  
एक दुक्का चल गया  
चल गया रे चल गया हॉ,  
चल गया रे चल गया एक तुक्का चल गया—2  
ऐसा हुआ संजोग हां इक रूक्का चल गया  
तीर सारे रह गये हां

तीर सारे रह गये इक तुक्का चल गया  
 गायक तालिम से रिश्ता न था उनका दूर का ।  
 ज्यूं कोई लोफर बने खाबिन्द सरग की हूर का  
 भू ललल भैंसे  
 तुक्कु क्या कहाँ.....चल गा ले, गा ले ।  
 भूल कर भी रास्ते पर वो मदरसे के कभी जाते न थे ।  
 वाले काले हरफों से आंखें कभी लड़ाते न थे ।  
 कोरस खनखनाते रह गये और खोटा सिक्का चल गया  
 कानाफूसी होते होते—2 एक किस्सा चल गया ।  
 चल गया रे चल गया हो एक किस्सा चल गया  
 चल गया रे चल गया हॉ हॉ एक तुक्का चल गया ।  
 ऐसा हुआ संजोग कि एक तुक्का चल गया ।  
 वीर सोते रह गये हॉ  
 तीर सारे रह गये हॉ हॉ एक तुक्का चल गया ।  
 तीर सारे रह गये हॉ हॉ एक तुक्का चल गया ।  
 माशुका हट  
 मनचला 1 किसको बोला ?  
 माशुका तुम्हें नहीं, उसको बोला ।  
 सब सुनकर जमीन पर लुढ़क जाते हैं...माशुका चली जाती है तभी एक मनचला आगे आकर  
 मनचला सुना मियाँ आपकी बिया आप ही के लफंगा कह गई ।  
 तुक्कु देखा आप लोगों ने हमारी बिया हमें ही लफंगा कह गई । इस चौखटटे पर हमारी इज्जत का  
 पंचनाम कर गई । सुना आप लोगों ने ।  
 तुक्कु हाय । नाकारा समझते हैं हमें लोग सारे ।  
 राहों से मुड़ मुड़ के चले जाते हैं हमारी किस्तम के सितारे ।  
 मनचला 1 अरे फिक्र आप करते है, ?  
 मनचला 2 इस दौलत के, इस दौलत के है आप, अकेले है वारिस । तुक्कु की जेब से सिक्का निकालता है ।  
 खफखफे बेवजह आह भरते हैं क्यों  
 तुक्कु मियाँ बाप दादों की दौलत में मजा आता नहीं....कुछ करके दिखाना चाहता हूँ मैं । लोग ताने  
 मारते हैं ....  
 लकलके ताने हुजूर ।  
 तुक्कु हॉ ताने मारते हैं लोग । बाप दादों की दौलत उड़ाता हूँ मैं । इसीलिये किसी नुजूमि को,  
 किसी नुजूमि को, अपना हाथ दिखाने जाता हूँ मैं, जाता हूँ मैं, जाता हूँ मैं ।  
 सभी दोस्त तुक्कु का इन्तेजार करते हुए आपस में बातें कर रहे हैं ।  
 लकलके मियाँ लम्बे निकल लिये कहीं । मियाँ हम भी चलते हैं नुजूमि को अपना हाथ दिखाने । हमारी  
 किस्मत का फैसला भी नुजूमि ही करेगा.... नुजूमि  
 तुक्कु और चेलों का प्रस्थान । नुजूमि चले का प्रवेश ।  
 नुजूमि हाथ दिखा लो ।  
 चेला पैसा हो तो ।  
 नुजूमि पॉव दिखा लो ।  
 चेला पैसा हो तो ।



नुजूमि किधर है ? किधर है ? किस्मत का मारा कोई किधर है ।  
 चेला किधर है ? न इधर है न उधर । किस्मत पर भरोसा अब, किसको किधर है ?  
 नुजूमि तू मुकददर को नहीं मानता ?  
 चेला नहीं मानता ।  
 नुजूमि किस्मत जब रंग लाती है ।  
 चेला कब रंग लाती है ?  
 गुरु इसी किस्मत के कारण तो राम को वन जाना पड़ा ।  
 चेला और हमें इस चौराहे पर आना पड़ा ।  
 नुजूमि तो हो जाये इसी बात पर गाना वाना ।  
 गाना किधर है, किधर है, हमको बताना । किधर है, किधर है, हमको बताना ॥  
 किधर है, किधर है, हमको बताना । किधर है, किधर है, हमको बताना ॥  
 अगर कोई किस्मत का मारा हो तो चेले जी, जल्दी बुलाना, जल्दी बुलाना ।  
 अगर कोई किस्मत का मारा हो तो छोरे जी, तब भी बुलाना, तब भी बुलाना ।  
 सुबह से आज बैठा, बना नहीं खाना । जा, जा के, उसको, पकड़ कर लाना ।  
 किधर है, किधर है, हमको बताना । किधर है, किधर है, हमको बताना ॥  
 चेला लगता है गुरु कोई आ रिया है  
 नुजूमि गौर से देख कौन आ रिया है ? नया है या पुराना ?  
 आज की रोटी का इन्तज़ाम करायेगा या यूँ ही गच्चा दे जायेगा ?  
 चेला गुरु ये तो बड़े जागीरदार का लड़का तुम्हें धाकड़े है । जेब से वो लगता तगड़ा है, तबीयत से कुछ कड़का है, लगता है कुछ भड़का भड़का है ।  
 नुजूमि बस तो समझ काम बन गया जाल मेरा तन गया । सितारे जब किसी पर मेहरबान होते हैं । तो गधे भी पेहलवान होते हैं ।  
 चेला भरोसा कौन करता है अब सितारे की चाल में । हॉ कुछ सिरफिरे कभी कभी फंस जाने हैं इस जंजाल में ।  
 नुजूमि इस किस्मत के कारण ही तो यहां वहां डोलता है तू । आज देखना मैं बड़ी रकम ऐठ कर दिखाऊंगा तुझे अपना करिश्मा...नहीं करतब.... ।  
 तुक्कू और उसके चेलों का प्रवेश । नुजूमि को देखकर आगे बढ़ जाते हैं और आपस में बातें करते हुए वापस पलटते हैं ।  
 तुक्कू नुजूमि को अपना हाथ दिखा दिया जाये ।  
 चेला तुक्कू के सामने आकर खड़ा हो जाता है यह समझ कर खुश होता है कि नुजूमि उसके बारे में बोल रहा है । नुजूमि उसे हटाता है तो एक मातहम आकर तुक्कू के सामने खड़ा हो जाता है इस तरह एक एक करके सभी मातहत सामने आकर खड़े होते रहते हैं और आने वाला मातहत उन्हें हटाता रहता है । तब आखिर में तुक्कू उन्हें हटाता है ।  
 नुजूमि आह.....क्या मुकददर है । जनाब का पैशानी पर ।  
 तुक्कू हमारे मुकददर के बारे में बात कर रहे हैं आप । मनचलों से मियाँ आपकी किस्मत के बारे में नहीं हमारी किस्मत के बारे में बात हो रही है...नुजूमि से क्या कह रही है मियाँ हमारी किस्मत...  
 नुजूमि किस्मत का सितारा चमक रहा है,  
 चेला नूर उपर वाले का दमक रहा है ।  
 नुजूमि किस्मत दरवाजे पर दस्तक दे रही है  
 चेला पुकार पुकार के कह रही है ।  
 तुक्कू क्या ? क्या कह रही है ? क्या कह रही है हमारी किस्मत ?

नुजूमि बैठ जा...सब बैठ जाते हैं  
 मनचले अरे बैठक बाबा  
 तुक्कु क्यों खों... क्यों खों... क्यों खों... बैठे बैठे ही आगे बढ़ते हैं ।  
 नुजूमि आप भरोसा करें तो आगे बयां करूं ।  
 तुक्कू करों, क्या तुम चाहे जो करों ।  
 लकलके पर जनाब के गुस्से डरो ।  
 लिफाफे अगर रकम ऐठने को ही बनाते हो बाते....  
 खफखफ तो पड़ेगी इतनी.....इतनी.....इतनी...लाते ।  
 तुक्कू कि मुददत तक उन्हें गिनते रहोगे....  
 चेला बहुत गुस्से में है, जरा संभल कर बोलियेगा  
**नुजूमि पॉव की ओर इशारा करता है ।**  
 तुक्कू पॉव नीचे करेगा, पॉव नीचे कर सब अपने अपने पॉव नीचे करते है ।  
 नुजूमि यकीन करें जनाब आपके सितारे बुलन्दी पर हैं । मुकददर आपका बहुत बड़ा ।  
 तुक्कू क्या...क्या बड़ा ?  
 नुजूमि बहुत बड़ा पलटा खाने वाला है ।  
 तुक्कू पलटा खायेगा...तो कहा जायेगा...क्या हम बरबाद हो जायेगा ।....ऐं  
 लकलके बता कैसे पलटा ।  
 तुक्कू मियाँ पलटा खा के क्या होगा ? कहीं हमें बरबाद तो नहीं कर देगा ।  
 नुजूमि पहले मियाँ इन्हें तो संभाल ले ।  
 तुक्कु आपने पलटिया खिलादी न ...अब जाईये और अपनी औकात में खड़े हो जाईये ।  
 नुजूमि बस एक पल जनाब, बस एक पल....बांचता हूँ जो आपके मुकददर का खजाना है । किस्मत में जो आपकी लिखा है, हों.....  
 तुक्कू लिखा .....है किस्मत में भी चीजें लिखी होती है ? पर हमें पढ़ना लिखना तो आता ही नहीं हैं ।  
 नुजूमि किस्मत में आपकी लिखा है आपको राजधानी जाना है और नवाब को कोर्निश बजाना है ।  
 तुक्कू कोर्निश बजाना है ? ऐ क्यूँ बजाना है ? पर हमें गाना बजाना भी नहीं आता । ...  
 लकलके **सलाम करके दिखाता है** जनाब कोर्निश  
 तुक्कू कोर्निश ? ...पर बजाना क्यूँ है ?  
 नुजूमि जनाब दरबार में आला अफसरों का जो इम्तहान.....  
 तुक्कू इम्तहान ? नहीं नहीं इस लफज से हमें लगता है डर, हमारी और इम्तहान की राशि मैल नहीं खाती ।  
 लिफाफों एकदम नहीं, जनाब को कोई इम्तिहान रास नहीं आता ।  
 नुजूमि घबराईये मत जनाब, यह तो आखिरी इम्तहान है... ।  
 मातहत क्या ? आखिरी इम्तेहान का वक्त आ गया ।  
**सभी तुक्कू को उठाकर तरम तरम तरम तरम तरम तरम तरम त त धुन पर ले जाते हुए आगे बढ़ते हैं । चेला आगे आगे मटकी लेकर चलने का अभिनय करता है ।**  
 नुजूमि क्यों मियां कौन निपट गया ?  
 चेला मेरा बाप ? अरे तुम ?  
**सभी तुक्कू को नीचे गिरा देते है । सब रोते हैं ।**  
 नुजूमि अरे चुप्प यह तो दरबार के आला अफसरों वाला इम्तहान है जनाब ।

तुक्कू पर...पर...पर उसमें तो बड़े बड़े तालीमयाफता लोग आते हैं, और हम क्या है, हमारी पढ़ाई क्या है ।

नुजुमी पढ़े लिखों की बात छोड़िये जनाब पढ़े लिख कर ही क्या पाते है ?

गाना कोई बाबू बनत, कोई चपरासी बनत, देखों ये किस्मत का खेल, पढ़े फारसी बेचे तेल ।

नुजुमी बड़े बड़े ओहदे इस रियासत में तालीम से नहीं जनाब, किस्मत से मिलते है ।

लकलके पव्वे से मिलते हैं, पैसे से मिलते है ।

लिफाफे किस्मत में न हो, तो न पोव्वे से मिलते है न पैसे मिलते है ।

नुजुमी एकदम सही बात कही जनाब न **तुक्कू से** जनाब आपके सितारे लाजवाब है आप के पांव में लगे जर्रे भी आफताब है । आप बस अफसरों के इम्तहान में शामिल हो जाईये मेरा दावा है ।

तुक्कू दावा ? किस पर दावा कर रहे हो, हम पर ?

**नुजुमी को पकड़कर उठाते हैं वह घबराता है ।**

मातहत दावा करेगा...हमारे जनाब पर दावा...।

नुजुमी नहीं नहीं हुजूर....मेरा मतलब है कि गारंटी है ।

तुक्कू कितने साल की ?

चेला मियाँ आप लोग अपनी औकात में अच्छे लगते हो ।

मनचला देखा इन जनाब को भी अपनी औकात अच्छी लगती है ।

नुजुमी आप यकीन करें जनाब आपका नम्बर लगेगा पहले तीन में, आप लिख ले जनाब ।

तुक्कू **लकलके से** मियाँ यह कह रहे कि हमारा नम्बर लगेगा पहले तीन में, लिख लो....ये कह रहे है तो लिख लो...।

लकलके मियाँ आप ही लिख ले । मेरा खुशखत ठीक नहीं है ।

तुक्कू **दोनों को डांटकर** अबे चुप रहो । हमें पता है कि कितने पढ़े लिखे हो आप लोग । औकात जानते हैं हम आपकी ।

मनचले औकात ।

तुक्कू **नुजुमी से** तुम सच बोल रहे हो ।

नुजुमी यकीन करें जनाब सितारे कभी झूठ नहीं बोलते ।

तुक्कू तुम्हारी बात सच निकली तो हम तुम्हें मालामाल कर देंगे....।

लिफाफे और झूठ निकली तो समझ लेना....।

तुक्कू हमारा भी नाम

मनचले तुक्कू धाकड़े है ।

लकलके तुम्हें रोने वाला भी न मिलेगा बंदा कोई ।

तुक्कू मियाँ ऐसी चकर गिन्नी खिलाउंगा

लिफाफे सात पुश्तों में भी न कर पायेगा धंधा कोई । **तुक्कू नुजुमी को** पैसे देकर एक तरफ जाकर सोचता है । सब बाहर जाते हैं । लकलके, लिफाफे और खफखफे अन्दर आते हैं ।

सब मुबारक हो..... मुबारक हो..... मुबारक हो

**तुक्कू उन्हें बाहर जाने का इशारा करता है ।**

तुक्कू **स्वगत** इन नुजुमियों पर यकीन तो नहीं मुझे ।...पर किस्मत भी तो कोई चीज है ....। आजमा लेने क्या हर्ज है काश मैं थोड़ा पढ़ना लिखना सीख जाता तो आज काम आता अब्बा हुजूर ठीक ही कहते थे । अब्बा की नकल करके पढ़ लो साहबजादे....काम आयेगा....पर तब लगता था क्या खाक काम में आयेगा...पढ़ने लिखने वालों ने ही कौन सा करिश्मा कर डाला है इस दुनिया में ....। तब तो कंचे खेलने और पतंग उड़ाने में ही मजा आता था । बड़ी कोफत होती थी किताब को देखकर । अब मान लो, वहां चला ही जाऊं और बेफाल्तु में भद उड़ जाये तो

कितना बुरा लगेगा । दोस्त यार अलग मजाक उड़ायेंगे ..... इन कमीनों को तो बस कोई बात होना.....न सालों ने खुद पढ़ा न मुझे पढ़ने दिया.....और अब्बा मियाँ कहेंगे कि ...अक्ल का अजीरन हो गया है आपको....सबसे बड़ी आफत तो अब्बा हुजूर हैं....उन्हें बताया कैसे जाये ? इजाजत तो लेना ही पड़ेगी...मुझे मालूम है छूटते ही कहेंगे । काला आखर ढोर बराबर और चले अफसर बनने.... । लेकिन इस कमबख्त बैठक बाबा का क्या करूं ? इसकी बातों ने मेरी तबियत भड़का दी है....दिल कहता है...चला जा, काम हो जायेगा, बन जायेगा. अफसर.....पर दिमाग कहता है मत जा ....जबरन भद उड़ेगी...हाये हाये क्या करूं, क्या न करूं ? बिना पढ़ा लिखा आदमी नवाब बन जाये तो कोई उंगली नहीं उठाता, पर अफसर को तो पढ़ा लिखा होना जरूरी है ....यह भी साली क्या बात है ....अरे पढ़े लिखें अफसर रखोगे तो वो तो उल्लू बनायेगे ही...पर अब क्या करूं ...? सिक्का उछालता हूँ....हाँ लकलके से मियां जरा सिक्का आपने हमारी जेब से निकाला था, उसे तो उछालो लकलके सिक्का उछालता है चित्त...अब तो मियां जाना ही पड़ेगा । वैसे तो पट आता, तो भी जाते मियां अब्बू से कह देना कि हम राजधानी निकल गये अफसरों का इम्तिहान देना.... हमारी भैंसों को भी नहलाते रहना वरना वो और भी काली पड़ जायेगी...अच्छा मियाँ.....

मनचला मियाँ हम लोगों का भी ख्याल रखना

तुक्कू आपका ही ख्याल रखने तो जा रहे हैं मियाँ

मनचला मियाँ हम आपको ऐसे नहीं जाने देंगे...अंदर से बाकी मनचलों को बुलाता है । सभी हार पहनाते हैं ।

तुक्कू ऐसा लग रहा है कि मियां कोई संत्री मंत्री बन गये हे...मियाँ अब जाने भी दीजिये मातहत जाकर फिर लौट आते हैं ।

मनचले टांग उठा कर मुबारक हो मियाँ मुबारक हो ।

तुक्कू मियाँ भौत हो गई मुबारकबाद...अब अपनी औकात में जाकर बाहर खड़े हो जाईये...तीनों बाहर जाते हैं ।

तुक्कू लेटे हुए माशुका का इन्तेजार कर रहा है ।

तुक्कू यहाँ हम दो घंटे से इन्तेजार कर हे हैं उधर वो वहाँ हमारा इन्तेजार कर रही है । और ये है कि अभी तलक नहीं आई । सोचता था उनके पास जाने से पहले इनसे मिल लेता ।

माशुक जाओ उसी मौतपड़ी के पास । हम जाते हैं ।

तुक्कू कहां ?

माशुक अपने घर ।

तुक्कू अरे कहां ?

माशुक अपने घर ।

तुक्कू अरे कहां ?

माशुक अपने घर ।

उसके बाद माशुका मैं चली....मैं चली गाना गाते हुए जाती है तुक्कू पीछे पीछे चक्कर लगाता है

तुक्कू बिया आप नाराज होकर जा रही हैं । अब क्या करें वहाँ हमारा इन्तेजार कर रही हैं । उसे भी तो नाराज नहीं कर सकते ।

माशुका कौन वो

तुक्कू मंच के कोने के पास दिखाते हुए.....वो

माशुका कौन वो ?

तुक्कू हमारी किस्मत

माशुका अच्छा तो ऐसा कहिये न । कहाँ बुला रही है आपकी किस्मत ?

तुक्कू दार उल सलतनत, हमें नजूमि ने बताया है कि आप का आला अफसरों के इम्तिहान में नम्बर लगेगा पहले तीन में ु

- माशुका लेकिन अफसर बनने के लिये तालीम की भी तो जरूरत होती है । आपने तो सारी उम्र यूँ ही गुजार दी ।
- तुक्कू अरे कह डालिये बिया, यह भी कह डालिये । आपको तो हमारी लू उतारने का मौका मिलना चाहिये । आप यह कहना चाहती है कि हमने तमाम उम्र गुल्ले खेलने में गुजार दी । गिल्ली डंडा खेलने में वक्त जाया किया । अब पतंगबाजी के शौक में दीवाने हो गये या यह कहिये कि मैं छोटे बच्चों के साथ मैदान में कूदकड़िया भरता रहता हूँ या घसियारों की तरह घास छीलता रहता हूँ । अरे कह डालो सब कह डालो ।
- माशुका अरे आप तो बुरा मान गये मेरी बात का । मेरे कहने का मतलब है कि ।
- तुक्कू आजकल किसी काम में भी तालीम की जरूरत नहीं पड़ती । अलादीन का किस्सा सुना है । उसे एक चिराग मिल गया था और वह उसके सहारे ।
- माशुक बात काट कर वो सब किस्से कहानियां है...
- तुक्कू क्यों भिश्ती जों दिल्ली के तख्त पर बैठा, तो किस्सा है ? तैमूरलंग बादशाह बना, वो किस्सा है ? ये तवारीख...
- माशुक अब्बा से इजाजत ले ली ?
- तुक्कू घर पर तो मैंने अपने दोस्तों से कहलवा दिया है कि बता देना मैं राजधानी जा रहा हूँ बस तुमसे मिलने आया था....
- माशुक तो ठीक है हम भी चलेंगे आपक साथ.... ।
- तुक्कू कहां ? तुम कहा चलोगी गुलबदन ? मोहतरमा मैं अफसरी का इम्तेहान देने जा रहा हूँ तफरीह को नहीं ।
- माशुक हम भी इम्तहान देगे ।
- तुक्कू इशारे से पूछता है, काहे का अफसरी का ।
- तुक्कू अफसरी का ? तो क्या नुजुमी आपसे अकेले में मिल लिया और उसने मुझे बताया तलक नहीं कि वो मेरी गैरहाजिरी में आप से मिल चुका है । अब बताउंगा उस घसियारों, चरकटे नुजुमी को । कोने में जाकर काल्पनिक नुजुमी को ललकारते हुये ऐ नुजुमी जाता कहा है सामने आ तू तेरी माशुक से मिला, वह भी अकेले में, अगर मैंने तेरी हड्डियों को पीस कर उसका सूरमा बना कर अपनी आंखों में न लगाया तो मेरा नाम भी....
- माशुक बात काट कर तुक्कू धाकड़े नहीं.....अरे मियां में न तो किसी नुजुमी से मिली और न ही कोई आया....पता नहीं आपको ये क्या हो गया ।
- तुक्कू पसीना पोछ कर सही कह रही हो....
- माशुक जी हां ।
- तुक्कू तो काहे का इम्तेहान दोगी तुम ? माशुक शरमाती है । हाय... काहे का इम्तिहान दोगी तुम ?
- माशुका शरमा कर इश्क का.....
- तुक्कू कसम से...
- माशुका कसम से....
- तुक्कू हाय...मेरी कब्र में कम से कम दो की जगह रखना यारों, साथ मरने की किसी बुत ने कसम खाई है ।
- माशुका लेकिन बिया सुना है रियासतों के दिन बहुत बुरे चल रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि इनके अफसर बनते रियासते खत्म हो जाये
- तुक्कू तो क्या हुआ ? अफसर तो हर हाल में ही अफसर रहता है....बदलते तो नवाब है । बदल जाये हम तो यहीं रहेंगे ।
- कोरस का प्रवेश
- कि हम बदले और तुम बदले

मगर तो क्यों नहीं बदले ?  
 जो नवाब बादशाह बदल  
 गुलमटे क्यों नहीं बदले ?  
 जो टेबलकुर्सियाँ बदली  
 तो कप सासर भी है बदलें ?  
 तुम्हारी चाय पार्टी में  
 ये अफसर क्यों नहीं बदले  
 गुलमटे क्यों नहीं बदले ?  
 ये चमचे क्यों नहीं बदले ?  
 (जीवनलाल वर्मा विद्रोही )

गाने के साथ फेंड आउट होता है....प्रकाश आने पर तुक्कू के घर का दृश्य...सभी मंच पर प्रवेश करते हैं तथा अम्मी से ।

मनचला अम्मीजानी  
 अम्मी कौन है ?  
 सभी अम्मी हम है । अस्सलावालेंकुम.....  
 अम्मी वालेकुम अस्ससालाम  
 सब ऐसे नहीं ।  
 अम्मी तो कैसे ?  
 सब तरन्नुम में ।  
 अम्मी वालेकुम अस्ससालाम तुक्कू को समूह में खोजते हुए...तुक्कू मियां कहा है ? कहते हुए अब्बा उनकी तरफ बढ़ते हैं मनचले दूसरे कोने में जाते है ।  
 गाना वालेकुमअस्सलाम  
 तुक्कु मियाँ कहाँ हैं ?  
 सभी वो हमें छोड़ कर चले, छोड़ कर चल गये.....  
 वो हमें छोड़ कर चले, छोड़ कर चल गये.....  
 अम्मी कहाँ चले गये ?  
 सभी बहुत दूर चले गये, तुक्कू मियाँ चले गये....  
 बहुत दूर चले गये, तुक्कू मियाँ चले गये....  
 अम्मी हमारे तुक्कू मियां हमें छोड़ कर चले गये ....  
 अरे जाने से पहले घर का चिराग रोशन कर जाते ।  
 अरे जाने से पहले घर का चिराग रोशन कर जाते ।  
 सभी अरे अम्मी, यहीं ही तो करने गये हैं । राजधानी गये हैं ।  
 अम्मी क्या मतलब ?  
 सभी आला अफसरों का इम्तिहान देने ।  
 सभी वो तो राजधानी गये हैं, आला अफसरों के इम्तिहान में शामिल होने के लिये  
 अम्मी अरे मियाँ की हिमाकत तो देखिये ...  
 पूरी उम्र गुजार दी कंचे और गिल्ली डंडा खेलने में ।  
 और अब मियाँ को फुरसत मिली है इम्तिहान देने की ।  
 लकलके डरते हुये नुजुमी ने बताया था उन्हें कि उनका नम्बर लगेगा पहले तीन में ।

अम्मी लाहोलविलाकुव्वत...

नुजूमियों की बातों में आ गया वो ।  
 नुजूमियों की बातों में आ गया वो ।  
 हँ जी आ गया वो । हँ जी आ गया वो ॥  
 अरे रकम ऐठने के लिये किसी को कुछ भी बता सकते हैं वो ।  
 हँ बता सकते हैं वो । हँ बता सकते हैं वो ॥  
 आदमी को चाहे तो दिन में भी तारे दिखा सकते हैं वो ।  
 हँ दिखा सकते हैं वो । हँ दिखा सकते हैं वो ॥  
 अरे नामाकूलो, तुक्कू मियाँ कहाँ गये ।  
 अरे नामाकूलो, तुक्कू मियाँ कहाँ गये ।

लकलके अम्मी जाते जाते वह मुझे से कह गये हैं कि तुझे सरकारी गल्ले की दुकान दिलवा दूंगा ।  
 लिफाफे और मुझे कचहरी का पेशकार बनाने का वादा कर गये हैं....  
 खफखफ मुझ से कह रहे थे कि तुझे दरोगा नहीं तो सिपाही तो बनवा ही दूंगा...

लकलके **उत्साहित होकर** और कह रहे थे कि, अफसर बनते ही अब्बू को, अम्मी को हज पर जरूर ले जाऊँगा ।

अम्मी अच्छा ! होते हैं कुछ नुजूमी, जो बिल्कुल सही सही बताते हैं । कौन नहीं चाहेगा कि उसकी औलाद उंचे ओहदे पर पहुँचे और खानदान का नाम रोशन करें । **मनचलों से** सब अपनी अपनी ही हाँके जा रहे हो । जाने से पहले मेरे पास ले आते तो उसे दुनियाँ और दीन के दुस्तूर समझा देती ....

मनचला हमने सब समझा दिया है अम्मी जान, नम्बर एक ।  
 एक हुक्मरान बने तो किसी से ज्यादा बात न करना...  
 मनचला नम्बर दो, ।  
 दो सियासी रहनुमाओं के साथ ही चलना...  
 मनचला नम्बर तीन, ।  
 तीन अदाकारों के मुह न लगाना  
 मनचला नम्बर चार ।  
 चार पर कलम नवीसों से कभी न उलझना ।  
 मनचला नम्बर पाँच ।  
 पाँच सब पर अपना रौब जमाना ।  
 मनचला नम्बर छः ।  
 छः भूल गया ।  
 मनचला अम्मी, आपको पड़ोसन जी बुला रही है ।  
**दूर से किसी के पुकारने की आवाज**

अम्मी मुझे ? तुम लोग यही बैठो, मैं अभी आई ।  
 मनचला लड़ने के लिये ।  
**अम्मी बाहर जाती है । नवाब अपने समखरे के साथ दिखती है और समूह गाना गाता है ।**

कोरस छैल छबीला सुल्तान म्हारा,  
 चाल चले मतवाला,  
 ढोलक चाल बदल के...आ...आ...  
 छैल छबीला सुल्तान म्हारा,

चाल चले मतवाला,  
 गली गली में मस्त फिरे हैं,  
 रख के हाथ में भाला  
 ओ ढोलक चाल बदल के....ऑ....ऑ  
 हाल ये पूछेंगे सबका  
 वो बात का है मतवाला  
 खाट खड़ी कर देंगे सबकी,  
 खाट खड़ी कर देंगे सबकी....  
 उनका बोलबाला,  
 ढोलक चाल बदल के....ऑ....ऑ....?  
 छैल छबीला सुल्तान म्हारा,  
 चाल चले मतवाला,  
 गली गली में मस्त फिरे हैं,  
 रख के हाथ में भाला  
 जुल्म ढायेंगे रैययत पर  
 करेंगे सब घोटाला  
 चोर तस्करों से मिलेंगे  
 चोर तस्करों से मिलेंगे  
 पड़ा है इनसे पाला, ढोलक चाल बदल के...आ.....आ  
 छैल छबीला सुल्तान म्हारा,  
 चाल चले मतवाला,  
 ढोलक चाल बदल के...आ.....आ

**सभी मातहत हयुमन वाल बनाये स्टेज के मध्य खड़े हैं और नवाबसाहब उनके पीछे से निकल कर फुदक फुदक कर इधर उधर टहलता हुआ ।**

मातहत ओ...ओ...ओ...ओ.....

नवाब कोई है । कोई है । आज तो हम शहर की गश्त करेंगे । **बेसुरी आवाज में गाता हुआ** अरे आज तो हम शहर की गश्त करेंगे...आज तो हम शहर की गश्त करेंगे । कोई है, कोई है ।

मसखरा **बाहर से प्रवेश करके** जी हॉ नवाबसाहब ।

नवाब उल्लू, गधा, पाजी, इतनी देर कहाँ लगा दी ?

मसखरा अरे नवाब साहब, अपनी रियासत में जो आला अफसरों का इम्तिहान होना है, उसी के इन्तज़ामात में मसरूफ था ।

नवाब कैसा इम्तिहान ? जैसा खुदा अपने बन्दो से लेता है ?

मसखरा जी नहीं नवाब साहब । यह इम्तिहान तो आला अफसरों की काबलियत जानने के लिये लिया जाता है । ताकि यह पता चल सकें कि उनकी काबलियत हमारी रियासत के किस काम आ सकती है ?

नवाब ते फिर हम भी देंगे इम्तिहान ।

मसखरा अरे हुजूर, इम्तिहान देना और इम्तिहान लेना तो छोटे लोगों का काम है । आप तो नवाब है !

नवाब अरे हॉ हम तो नवाब है ! सुनो ..... आज हम शहर की गश्त करेंगे ।

मसखरा गश्त मोहतिरमा ? पालकी लगवाउं ।

नवाब नहीं पालकी नहीं ।



- मसखरा तो बग्गी कसवाउं नवाबसाहब ?
- नवाब आज हम पैदल ही जायेंगे ।
- मसखरा पैदल ?.....लाहौलविलाकुव्वत....अरे पैदल जायेगे तो आपके नाजुक पैरों को तकलीफ होगी ।
- नवाब नहीं । हमसे हकीम साहब ने कहा कि सुबह की ताजी ताजी हवा में तफरीह करना सेहत के लिये फायदेमंद है ।
- मसखरा अजी कमाल करती है आप, इतनी जल्दी उठवा दिया....अभी तो रात है
- नवाब **अदाओं से** हां यही तो बात है...हमारी सात पुश्तों में भी कोई जल्दी नहीं उठा तो हम कैसे उठ सकते हैं ?
- मसखरा अरे, आप के लिये क्या मुश्किल है । आप चाहें तो, सुबह की हवा, रात में चलवा दें ।
- नवाब कर सकते हैं ..... चाहे तो यह भी कर सकते हैं....पर हम कुदरत का कायदा नहीं बदलना चाहते । हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से रियाया को कोई तकलीफ हो....हमें अपनी रियाया का कितना ख्याल हैं.....लेकिन हमें एक बात सूझी है...हम सुबह की ताजी हवा पर महसूल लगायेंगे । जाओ मुनादी करा दो । ...क्या ख्याल है ?
- सभी दीवार बने हुए पात्र बिखर जाते हैं और मंच के चारों ओर जाकर मुनादी करते हैं**
- मुनादी सुने....सुने....सुने....सभी आम और खास को इत्तिला दी जाती है कि बहुक्म नवाब खामाखों सुल्तान .... आज से खुदा की दी हुई नियामत सुबह की ताजी ताजी हवा पर भी महसूल लगाया है ।
- मातहत मुनासिब है हुजूर एकदम मुनासिब । बहुत से लोग सुबह की हवा को यूँ ही फोकट में खा जाते हैं । आप तो ताजी ताजी हवा का एक कारखाना खुलवा ले ।
- नवाब जैसे ?
- मातहत जैसे उदयपुर के रसगुल्ले, जैसे आगरा का पेठा ...उसी तरह हुजूर, सुबह की ताजी ताजी हवा एकदम डिब्बाबंद ।
- नवाब वाह.... आप भी हमारें साथ रहते रहते दिमाग का सही इस्तेमाल करना सीख गये...डिब्बा बंद सुबह की ताजी हवा...लाजवाब ख्याल है....जब जी चाहे डिब्बा खोलो और खा लो सुबह की हवा.... भई खूब । मसखरे जल्दी से एक कारखाना खुलवा दो....तो अब चलो....। **सब उसे बग्गी में बिठा कर चक्कर लगाते हैं ।**
- नवाब अरे रूको ...नीचे उतारो । क्यों बे कमबख्तों, बेशउरों, हमने कहा नहीं था, कि हम पैदल पैदल जायेंगे ?
- नवाब **जूते उतार कर मातहतों को देता है । सड़क पर पैदल चलने का अभिनय करते हुए**  
 धा धा धा धातिद धा धा धा, धागे तिरकिट धातिद धा ।  
 धा तिरकिट तक किट तक धातिद धातिद धा धा धा ।।  
 तिरकिट धा धा धा, धागे तिरकिट धातिद धा ।  
 किड़नग तातिरकिट तक धा तिरकिट तक धा ।।  
 धातिर किटतक धा तिरकिट तक धा धा धा ।  
 धागे तिरकिट धिन्ना गिन्ना, धागे तूना कत्ता ।  
 धागे तिरकिट धिन्न किड़दा धिन्ना ।  
 धागे तिरकिट धिन्ना, धातिद धातिद धातिद धातिद धा ।
- नवाब हां...हां कित्ता अच्छा लगता है जमीन पर पैदल चलना....**मातहतों से** तुम लोग चले हो कभी इस पर ?
- मातहत नवाबसाहब हम तो इसी पर खाते हैं...इसी पर सोते हैं, और इसी को लपेटते हैं । इसी पर मस्ताते हैं ।
- गाना खाते, पीते, सोते, जागते । खाते, पीते, सोते, जागते ।।

- टॉय टॉय दुई दुई दुस्स ।
- नवाब हूँ ...पर ये सड़कें बहुत उबड़ खाबड़ है । ऐसा करें कि सारी की सारी सड़कें संगमरमर की बनवा दी जायें ।
- मसखरा पर नवाब साहब इसमें तो बड़ा खर्चा आयेगा...
- नवाब तो कोई बात नहीं, हम दूसरी रियासतों से ले लेंगे ।
- मसखरा पर नवाब साहब, हम तो पहले से कर्जे की दलदल में धसे हुए हैं ।
- नवाब पागल, यह सोचना हमारा काम नहीं है । यह तो आने वाली पीढ़ीया सोचेगी ।
- मसखरा पर आपको कौन सा रोज रोज चलना है इन पर ।
- नवाब हां हमें कौन सा रोज रोज चलना है...तो ठीक है ऐसा करें कि थोड़ी सी जमीन उठवा कर हमारे महल में ले आओ...समझे ?...चलों शहर के सदर दरवाजे की तरफ चलो ...**सब चलते हैं** रुको...वो इमारत क्या है ?
- मसखरा वो आप की ब्रितानी बिल्लियों की रिहाईशगाह है ?
- नवाब लेकिन उनका तो इन्तेकाल हो चुका है.....अब इससे क्या फायदा ...**सोचकर...** गिरवा दो...
- मसखरा यहाँ अवाम को छत यस्सर नहीं और ये इसी को नेस्तनाबूद करने पर तुली हुई है । जब रियासत में बाढ़ वगैरह आती है, तो यही एक ठिकाना होता है, अवाम के सिर छिपाने का **नवाब** से इसे रहने दें । इस इमारत की वजह से आप तवारीख में याद रखी जायेगी कि क्या नवाब थे। जिसके रियासत में अवाम तो अवाम, बिल्लियों के रहने तक महल बनवाये गये थे । **थोड़ा आगे जाते हैं**
- नवाब वो क्या है ?
- मसखरा पुल खड़ा है ।
- नवाब पर क्यों खड़ा है ?
- मसखरा सफेद हाथी आने की बजह से बनवाया गया था । अगर पुल न होता तो सफेद हाथी दरिया के इस पार कैसे आता ?
- नवाब हाथी तो आ चुका ... इसलिये इसे तोड़ दो ?
- सभी मातहत तोड़ने आगे बढ़ते हैं**
- सब डिम डिम डेगा डेगा, डिम डिम डेगा डेगा, , डिम डिम डेगा डेगा, उन
- मसखरा **उन्हें रोक** बावले हुए हो क्या ? अगर कल इन्होंने सफेद शेर मंगवाया, तो फिर से पुल बनाना पड़ेगा और रियासत पर जबरन महसूल लगेगा । जाओ वापस । नवाब साहब इस पुल को तुड़वाने की कोई ज़रूरत नहीं । बारिश होते ही अपने आप बह जायेगा । **मातहतों से अब आगे चलों का इशारा करता है ।**
- नवाब अरे वाह कितना अच्छा है, हमारा सरकारी महकमा । चलो अब शहर के सदर दरवाजे की ओर चलो
- सब लोग उसे उठा कर मंच का एक चक्कर लगाते हैं और तुरन्त सभी मातहत एक हयूमनगेट बनाते हैं तुक्कू का प्रवेश**
- नवाब **मसखरे से लाओ तुम्हारा साफा मुझे दो ।**
- मसखरा क्यों ? आप मेरा साफा बांधेंगे ?
- नवाब हां...और भेस बदल कर आने जाने वालों के मजे लेंगे
- मसखरे का साफा लेकर बांधता हैं**
- तुक्का **दरवाजे पर पहुंच कर** लो मियां राजधानी पहुंच गया । रास्ते भर न आदमी दिखा और न आदमजात, सिवाए चमगादड़ों के । इससे तो हमारा गाँव ही बेहतर है । कोई नया इंसान जैसे गाँव की पगडण्डी पर दिखा नहीं कि कुत्तें भौंक भौंक कर उसका इस्कबाल करने लगते हैं । पूरे गाँव को खबर हो जाती है कि कोई मेहमान गाँव में आने वाला है । और यह शहर...

सुनसान, बियाबान और वीरान ....मुझे तो डर लग रहा है। रुपये पैसे अंदर बांध लेता हूँ, नहीं तो लूटपाट हो जायेगी।

नवाब शायद कोई अंदर दाखिल हो रहा है....शी तुम सब उसे परेशान करना, हम उसका लुटफ लेगें।  
**तुक्कू उन से टकरा जाता है।**

मातहत—1 अबे कौन है बे तू ?

तुक्का अरे पूछता है कौन है, एक तो टकरा गया...

मसखरा अबे टकराया तू कि हम, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ...

तुक्कु उल्टे सीधे तो खुद पड़े हो और हमसे कहते हो कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ...

तुक्का **से** कमाल है एक तो बीच रास्तों में झुण्ड बनाये खड़े हो सब के सब । ये सड़क क्या यूँ रात बिरात मटरगश्ती करने को है.....ऐ ? यह बिया इन लफगों के साथ क्या कर रही है ?

नवाब क्यों मियाँ, ग्वारपाटे के पत्तों, हम मटरगश्ती कर रहे हैं ? और तुम ? तुम क्या कर रहे हो ?, गिल्ली डण्डा खेल रहे हो ?

तुक्का नहीं, हम गिल्ली डण्डा नहीं खेले रहे हैं । अरे हम आये हैं और बहुत दूर से आये हैं ।

नवाब कहां से आये हो.....लंदन से ?

तुक्का **चिढ़कर** नहीं सूखी सेवनियां से आयें हैं, तुमसे मतलब ?

नवाब मतलब तो हमें है । हालांकि तुम शक्लोसूरत से तो खानदानी लगते हो, पर मियां इतनी जल्दी में जा कहां रहे हो, जरा हम भी तो सुनें ?

तुक्का अब कहीं नहीं जा रहे, यहीं दिल लग गया हमारा । वहां किस्मत हमारा इन्तेजार कर रही है और बिया खामाखां ही हमारा वक्त जाया कर रही है ... हम आला अफसरों का इम्तिहान देने आए हैं ।

नवाब पर वहां तो दाखिला अब बंद हो गया होगा....

तुक्का तो आप उस जगह का पता जानती है । हमें फौरन से पेशतर बता दीजिये, हमारा इम्तिहान में शामिल होना जरूरी है । हमारा नंबर लगेगा पहले तीन में ।

नवाब कमाल है, इम्तिहान में शामिल होने से पहले नतीजा भी जानते हो ..... ?

तुक्कु इसी को तो काबलियत कहते हैं ।

नवरब **मसखरे से** आदमी काबिल दिख रहा है...

मसखरा मगरूर लगता है, जनाब ।

नवाब नहीं आदमी काबिल लग रहा है ।

मसखरा हां, नवाब साहब आदमी काबिल लग रहा है ।

नवाब **तुक्कू से** मियां रास्ता तो हम बता देंगे और इम्तिहान में शामिल भी करवा देंगे ।

तुक्कू जल्दी बताईयें वक्त नहीं हमारे पास ।

नवाब पर पहले हमारे एक सवाल का जवाब दो..... ।

तुक्का जरा जल्दी पूछिये...मुझे जरा जल्दी है....किस्मत वहां खड़ी खड़ी इंतजार कर रही है मेरा....

नवाब एक दरबार में एक किसान आया बेचारा बहुत परेशान था उसने हरी मिर्चें उगाई थी और बाजार में हरी मिर्चों का भाव कम और लाल मिर्चों का था ज्यादा ....अब बताओं नवाब उसकी परेशानी कैसे दूर करें ?

तुक्का यह तो जनाब बहुत आसान सवाल है....

मसखरा आसान है तो जवाब दो मियां....

तुक्का इसमें क्या दिक्कत है, हरी मिर्चों का भाव कम है, तो उससे कहो कि लाल मिर्चें उगाये....

- नवाब वाह वाह....वाह....वाह....हम कहते न थे कि आदमी काबिल लग रहा है । **मातहत से** लो यह हमारा रूक्का लेकर जाओ और इन जनाब को इम्तिहान में शामिल करवा दो दौड़ कर जाना और भाग कर आना ।
- मातहत और तुक्का का एक तरफ और दूसरी और नवाब और मातहतों का प्रस्थान**
- मसखरा चलिये मियों
- तुक्कू चलिये...अरे रूकों रूको मियों....**नवाब से** ....क्या है कि हम अफसर बनने तो जा ही रहे हैं । आप का सेक्रेटियट कोई काम हो तो, तो बता दीजियेगा । **चुटकी बजा कर इशारा करता है..** यूँ करा देंगे
- नवाब हमारा काम....**हँसते हुए प्रस्थान करता है**
- मसखरा और तुक्कू मंच पर चक्कर लगाते हैं....गाना शुरू होता है ।**
- गाना ले के रूक्का अपने प्यारे नवाब का ।  
खाका वो बन गया था अफसरों के ख्वाब का ।।  
देखा जो अफसरों ने रूक्का नवाब का ।  
जलवा सा उन पर खिंच गया अपने जनाब का ।।  
शामिल हुए यूँ तुक्कू मियां इम्तिहान में ।  
मशवरा उनने किया, सारे के सारे बिछ गये ।।  
मशवरा उनने किया, सारे के सारे बिछ गये ।।  
उनकी किस्मत के सितारे रास्ते में बिछ गये ।  
उनकी किस्मत के सितारे रास्ते में बिछ गये ।।  
**तुक्कू रोता है मसखरा उसे हैरानी से देखता है**
- मसखरा अरे अरे...मियों यह आप क्या करने लगे.... ?
- तुक्का हम रो रहे हैं ।
- मसखरा पर क्यों रो रहे हैं ?
- तुक्कू हमें अपने घर की याद आ रही है ।
- मसखरा **उसे ढाँढस बंधाता हुआ** सब ठीक हो जायेगा मियां । आप को यहां की आबो हवा रास आ गई तो घर तो क्या घरवालों को भी भूल जायेंगे । अब ये रोना बंद करें ।  
**मंच का एक चक्कर लगाते हैं फिर मातहत तुक्कू को एक जगह इंगित करके बताता है ।**
- दरबान 1 क्यों मियों, इतनी रात को यहाँ क्या कर रहे हैं ?
- तुक्कू इम्तिहान देने आये हैं ।
- दरबान 2 इतनी रात को ? चलिये....चलिये, सुबह आईये ।
- तुक्कू आप ऐसा कीजिये, इम्तिहान के जो इन्तज़ाम अली है, उन्हें बुलवाईये ।
- दरबान 1 तुमको एक बार समझा दिया, समझ में नहीं आया तुमका ?
- तुक्कू ऐसे नहीं मानेंगे, यह लीजिये ।  
**दोनों सामने जाकर गिरते हैं । तुक्कू के इशारे पर उठक बैठक लगाते हैं । आवाज लगाते हैं । दोनों मुम्तईन / परीक्षक घोड़ा चाली में बाहर आते हैं ।**
- मसखरा मियां वो रही जगह, जहां आपको इम्तिहान देना है अब आप चले जाये और मुझे इजाजत दे देखता रहता है परीक्षक अंदर से निकल कर आते हैं । तुक्कू उन्हें भी मारता है ।
- तुक्का परीक्षकों से क्यों खों, आप ही है न इम्तिहान के इन्तज़ाम अली ?
- परीक्षक—1 जी हां फरमाईये क्या बात है ?
- तुक्का **आगे आकर** क्या बात है, क्या बात है का क्या मतलब ?

- परी मतलब का क्या मतलब है मियां, कौन है आप और इतनी रात को तशरीफ क्यों लाये हैं ?
- तुक्कू **मसखरे से** लीजिये इनकी बात सुनिये, कह रहे हैं कि इतनी रात को तशरीफ क्यों लाये हैं ? ....हद है ।
- परी-2 इसमें हद की क्या बात है ए....हद की क्या बात है ?
- तुक्कू हट ही तो है, हद ही तो है ।
- परी-1 आखिर आप चाहते क्या है जनाब ?
- तुक्कू हम आला अफसरों वाला इम्तेहान देने आये हैं और बहुत दूर से आये हैं और आप पूछ रहे कि....
- परी-2 अरे पूछ लिया तो कौन सा गुनाह कर दिया जनाब ?
- परी-1 और सुनिये, इम्तिहान कल है और ठहरने के सारे कमरे भर चुके हैं । आप यहाँ से तशरीफ ले जाईये ।
- तुक्का **स्वगत** अरे तुक्कू मियाँ, लगता है किस्मत ने यहाँ पर लाकर गच्चा दे दिया **प्रकट** पर हम भी किस्मत को गच्चा नहीं देने देंगे । हम तो इम्तिहान देंगे ।
- परी-2 मियाँ क्या कहा आपने ?
- परी-1 जनाब हम आपसे कह चुके हैं कि इम्तेहान में शामिल होने की मियाद खत्म हो चुकी है ।
- परी-2 अब आप तशरीफ ले जाये ।
- तुक्कू वाह आपने कह दिया और हमने मान लिया....हद है ।
- परी-1 ये हद है, हद है क्या लगा रखी है आपने....
- तुक्कू मियाँ लगता है, लातो के भूत है, बातों से नहीं मानेंगे संगीत मंडली की तरफ देखकर मियाँ तैयार रहना । तुक्कू वारम अप करता है और दोनों परीक्षक को एक हाथ मारता है । दोनों गिर पड़ते हैं । तभी मसखरा दौड़ कर आता है
- मसखरा अरे रुकिये जनाब...आप तो पहलवानी पर उतर आये ।
- तुक्कू कुछ नहीं एक ही हाथ तो चलाया, काम लग गया दोनों का ।
- मसखरा एक मिनट आप इधर बैठिये ....मैं देखता हूँ इन सबको तुक्कू एक कोने में जाकर खड़ा होता है दोनों परीक्षक उसे देखते ही पहचान लेते हैं ।
- तुक्कू मियाँ म्युजिक देना । घोड़ा चाल में कोने में जाकर बैठता है । मसखरा परीक्षकों के पास जाता है ।
- दोनों अरे आप
- मसखरा जी हां मैं...इन जनाब को नवाब साहब ने भेजा है आला अफसरों के इम्तिहान में शामिल होने के लिये...यह रहा उनका रूकका. अब आप जैसा चाहे मुनासिब समझें. आपकी मर्जी...
- परी-2 आप बिल्कुल बेफिक्र रहे.....सब ठीक हो जायेगा ।
- मसखरा तो अब मुझे इजाजत दीजिये....अच्छा खुदा हाफिज **मसखरे का प्रस्थान**
- तुक्कू **दरबान डण्डे पर टांग कर ले जाने लगते हैं ।** क्यों मियां ऐसे कहाँ ले जा रहे हैं बकरे की तरह टांग कर
- मातहत हुजूर, यहां का यही दस्तुर है मेहमाननवाजी का ।
- तुक्कू बड़े उल्टे सीधे दस्तुर है, लगता है सीखना ही पड़ेंगे । आप लोग रस्म पूरी कीजियेगा ।
- दोनों तुक्कू का सामान अंदर ले जाते हैं तुक्कू मियां को दोनो मातहत बकरे की तरह टांग कर पुनः ले जाते हैं ।
- परी-1 सुने इन जनाब का सारा सामान हम अपने कमरे में रख दें और वहीं इनके सोने की इन्तेजाम भी कर दें....
- परी-1 अपने कमरे में जनाब ?
- परी-1 अरे आप को एक बार में सुनाई नहीं दिया कि बला....हर बात में सवाल हर बात में सवाल...

- परी-2 अरे अब तो इन जनाब की सारी जिम्मेदारी हमारे ही सर पर आ पड़ी है ।
- परी-1 यही तो । सवाल तो आपको ही पूछना है ऐसा कीजिये कि आप इस किताब से पूछ लीजियेगा ।
- परी-2 मान लीजिये कि वो किताब उनने पढ़ी ही न हो तो ?
- परी-1 **सोचते हुये** तो अमकी किताब से पूछ लीजिये ।
- परी-2 अमकी किताब उनने देखी न हो तब ?
- परी-1 तो ढिमकी किताब ?
- परी-2 वो भी न देखी हो तो ।
- परी-1 तो ऐसा करते हैं कि उन्हीं से पूछ लेते हैं कि जनाब आप कौन सी किताब पढ़ कर आये हैं
- परी-2 तेवर नहीं देखे, बिगड़ गये तो बैठे बिठाये की मुसीबत.....
- परी-1 तो अब क्या करें ?
- परी-2 ऐसा करते हैं, एक खाली कापी ले आते हैं और हम उस में जवाब सवाल पहले से ही लिख डालते हैं क्या ख्याल हैं ?
- परी-1 मियां इसकी भी क्या जरूरत है । रूक्के को पर्चे में ही रख देते हैं । जांचने वाले खुद ही समझ जायेंगे क्या ख्याल है ।
- परी-2 नेक ख्याल है, तो शुरू हो जाईये....
- दोनों परचा पर रूक्का चिपका देते हैं । एक वृत्त में मसखरा मुनादी करता हुआ दिखता है ।**
- मसखरा सुने....सुने....सुने....दरबार के आला अफसरों के इम्तिहान का नतीजा खुल गया है ।
- नागरिक क्यों मियाँ सुबह सुबह कान पर क्यों भिनभिना रहे हो ।
- मसखरा आला अफसरों के इम्तिहान का नतीजा खुल गया है ।
- लड़की क्यों मियाँ इनमें कोई खूबसूरत भी है ।
- मसखरा हाँ है....लेकिन आपसे मतलब
- लड़की मतलब है तभी तो पूछ रहे हैं ।
- मसखरा दरअसल जितने भी अफसर हैं उन सभी की तस्वीरें मेरे घर पर रखी हैं....लेकिन उन सब से ज्यादा मैं ही खूबसूरत हूँ ।
- लड़की शकल देखी है आईने में ।
- अफसरों का प्रवेश**
- मसखरा जनाब, पहले नम्बर आये हैं....जनाब अफलातून, जनाब अगरचे, जनाब मगरचे.....और दूसरे नंबर पर सिर्फ एक ही जनाब कामयाब हुए हैं....
- सब कौन जनाब ? कौन जनाब ? कौन जनाब ?
- मसखरा जनाब तुक्कू धाकड़े....
- तुक्कू का प्रवेश तथा अफसर मसखरा के पास जाते है....**
- बूढ़ा मियां यह तुक्कू धाकड़े कौन है ?
- मसखरा वो जो सामने खड़े हैं पहलवान से । वो ही तुक्कू धाकड़े हैं
- बूढ़ा देखा मियाँ कैसे कैसे चुगद आ जाते हैं अफसर बनने ?
- मातहत जब आप पहली बार आये थे, तो आप भी ऐसे ही चुगद नज़र आते थे ।
- मनचला **तुक्कू के पास जाकर** ....माशाल्लाह मियाँ आप बड़े खूबसूरत हैं ।
- तुक्कू ये लो । ये भी यही आकर पता चला कि हम बहुत खूबसूरत है ।
- मनचला मियाँ अभी आप कुंवारे है क्या ।
- तुक्कू जी हा, अभी तलक तो है, कहिये ।

मनचला दरअसल हमारी खाला की खाला के निकाह के बारे में बात करना थी ।

तुक्कू खाला की खाला ...तो ठीक है हमारे अब्बू के अब्बू से कर लीजिये, जन्तनशी है वो ।

मनचला क्यो वो भी कुंवारे हैं क्या....

तुक्कू जन्त जाकर यह भी पूछ लेंना....कह कर तुक्कू चला जाता है....

मनचला लगता है कि कुंवारे के खानदान से हैं ।

अफसर मियों तीसरे नंबर पर कौन आया है ।

मसखरा और तीसरे नंबर पर आये है जनाब अमके, जनाब ढिमके, जनाब खिमके । जनाब पूरी फेहरिस्त मेंरे पीछे लगी है । आप खुद पढ़ लें ।

सभी अफसर उसके पीछे जाकर फेहरिस्त पढ़ते हैं । मनचले मंच के बाहर चले जाते हैं

अफसर अपना तो कोई नहीं आया ।

सभी अफसर चले जाते हैं । मसखरा दूसरी तरफ निकल जाता है ।

बूढ़ा मुझे लगता है कि जरूर दाल में कुछ काला है । मंच से प्रस्थान करता है

संगीत की लय पर मातहतों तथा अफसरानों का प्रवेश । दूसरी तरफ से नवाब के सिंहासन को लिये सिपाही गण पर प्रवेश करते हैं सभी अपनी अपनी जगह व्यवस्थित हो जाते हैं । संगीत की धुन बदलती है....उस पर नवाब का प्रवेश । सभी उसका अभिवादन करते हैं । वो इशारा करता है । सभी बैठ जाते हैं ।

नवाब हाँ तो कहें जनाब....हमने सुना है कि हमारी रियासत का सूरज शाम को ढलने लगा है ।

अफसर बात यह है नवाब साहब....

सभी फ्रीज हो जाते हैं । तुक्कू का मंच पर प्रवेश....मसखरा उसके पीछे पीछे नकल करता हुआ चलता है ।

गाना बनते ही अफसर तुक्कू किसी को मुँह न लगाये, मुँह न लगाये ।  
ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ । ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ ।।  
ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ । ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ ।।  
प्यादे से फरजी भयों, टेढ़ो टेढ़ो जाये ।  
प्यादे से फरजी भयों, टेढ़ो टेढ़ो जाये ।  
ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ । ऐ दिन तौर, औकात न छोड़ ।।

तुक्कू ऐसे टुकुर टुकुर क्या देख रहे हो, ऐसा लगता है कि आज से पहले किसी अफसर को देखा ही नहीं ?

मसखरा अरे मियों, आप ने पहचाना नहीं ? मैं वो....

तुक्कू कौन वो....?

मसखरा अरे वो ही....

तुक्कू अरे ऐसे तो पचासों वो से हमारा रोजाना वास्ता पड़ता रहता है ।

मसखरा अरे जिसने आपको अफसरों के इम्तिहान में शामिल करवाया था ।

तुक्कू मियों आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे कि आप ही ने इम्तिहान में कामयाब कराया हो....चलिये हटिये यहाँ से....

मसखरा मियां कुर्सी मिलते ही अपनी औकात भूल गये...चढ़ गया नशा अफसरी का ।

तुक्कू सलीके से बात करना । अभ अन्दर करवा देंगे तो सारा सलीका आ जायेगा बातचीत का ।

मसखरा अरे छोड़िये...छोड़िये...नम्रता से छोड़िये न ।

तुक्कू ऐसे प्यार से कहिये न ।

मसखरा जाता है और दोनों दरबानों के कानों में जाते जाते कुछ कह जाता है ।

तुक्कू नवाब साहब से मुलाकात कर ली जाये ।

- दरबान 1 ऐ मियाँ अन्दर कहाँ चले आरहे है ।  
तुक्कू नवाब साहब से मुलाकात करना थी ।  
दरबान 2 सूरत देखी है अपनी ।  
तुक्कू मियाँ सूरत पर न जाईये, सीरत देखिये । आला अफसरों के इम्तिहान में दूसरे नम्बर पर कामयाब हुए है ।  
दरबान 1 अरे हुए होंगे ।  
दरबान 2 न सर पर अफसरों की टोपी और न बदन पर रियासती लिबास ।  
दरबान 1 और चले आते हैं अफसर बनने । चलिये जाईये । जाईये ।  
दरबान 2 वैसे भी नवाब साहब अफसरान के साथ मिलकर रियासत के जरूरी मसला पर सलाह मश्विरा कर रहे हैं ।  
दरबान 1 आप अपनी तशरीफ ले जाईये ।  
तुक्कू पढत्रे लिखे नहीं है तो रियासत के रस्मो रिवाज भी नहीं मालूम, अब क्या करूँ । और किसी से पूछेंगे तो बेफालतू में भद उड़ जायेगी । मगर क्या करें, पूछना तो पड़ेगा ही न । **मसखरा आता है** । आदाब अर्ज है । मियाँ गुस्ताखी माफ हो । वो क्या है कि मैं अभी नींद से उठकर आया था, इसलिये आपको पहचान नहीं पाया ।  
मसखरा वक्त जाया न करें मतलब की बात करें  
तुक्कू मियां आप यहां अंदर क्या कर रहे थे ?  
मसखरा वो क्या है कि मैं नवाब साहब का खास मसखरा ....**जबान दबाता है** नहीं नहीं मैं उनके मसखरे का खास गुलाम हूँ । उनकी वजह से इनसे...**दरवान की तरफ इशारा करके** ...इसलिये इन सबसे पहचान है ।  
तुक्कू **स्वगत** बहुत ही घटिया इंसान है । घटिया है तो क्या हुआ, क्योंकि इनसे तो काम निकलवाना है । मियां एक अहसान तो आप मुझ पर कर चुके हैं...इम्तिहान में कामयाबी तो आपकी वजह से मिली । अब मुझ पर एक अहसान और करें जैसा कि आप ने उस दिन किया था...मुझे नवाब साहब से मिलना है ।  
मसखरा वैसा वाला....ठीक है अभी किये देते हैं...**तुक्कू के सर का बाल तोड़ता है और उसका फंदा बना कर तुक्कू के गले में डाल कर एक सिरा अपने पाँवों में फंसा लेता है और उसे खींचता है तुक्कू का गला फंस जाता है** ।  
तुक्कू मियां ढील देना ढील....  
मसखरा ढील चाहिये.....लो अपने पांव को तुक्कू के करीब कर लेता है ....मियाँ अब मुझे अपनी औकात कभी मत दिखाना समझे....**खींचता हुआ दरबार में लाता है**....अब रुकिये....मैं नवाब साहब को इत्तिला करके आता हूँ ।  
नवाब कहे....रियाया को कोई परेशानी तो नहीं ।  
आलिम गन्ने के काश्तकार बहुत परेशान है । गन्ने की मिठास की वजह से जंगली हाथी मैदानी इलाकों की सारी की सारी फसलों को चट कर जाते हैं ।  
नवाब अच्छा.... तो फौजो को भेजिये ।  
आलिम अब फौजो को कहाँ से भेजे नवाब साहब....अकाल की वजह से रियाया बगावत पर आमादा है जगह जगह नारे लगाती हुई घूम रही है और खाने के लिये रोटी मांग रही है ।  
नवाब हूँ , तो आपने कुछ इन्तेजाम किया ?  
आलिम कहाँ से करें नवाब साहब....अपनी पूरी रियासत का पानी नदियों में रुकता ही नहीं बल्कि बह कर दूसरी रियासतों में चला जाता है जिसकी वजह से हमारी जमीने सूखी रह जाती है...और रियाया पानी को तरसती रहती है ।  
नवाब आप सब लोग कुछ करने के बजाय मेरा कीमती वक्त खराब करने यहां चले आते हैं...मुझे ही कुछ सोचना पड़ेगा...**सोचने का अभिनय करता है** । मसखरा आता है और नवाब के पास जाता है



मसखरा नवाब साहब...सोचने वाला तो आ गया ।

नवाब कौन ?

मसखरा वही जनाब...मसले वाले, जो अफसरों के इम्तहान में शामिल होने बड़ी दूर से आये थे ।

नवाब बुलाओ उनको । यहाँ भी एक दो मसले हल होना है....

तुक्कू मियां मसखरे के साथ अंदर आते हैं सभी हैरत से उन्हें देखते हैं और वे नवाब को हैरत से देखते हैं

तुक्कू स्वगत अरे वे तो वहीं बिया है जो उस दिन लफगों के साथ मटरगश्ती कर रही थी । ... प्रकट अस्सलावालेकुम नवाब साहब.....गुस्ताखी माफ हो । उस दिन मैं इतना परेशान था कि आपको पिचान नहीं पाया.....उम्मीद है कि आला हजरत ने मेरी उस गुस्ताखी को माफ कर दिया होगा ।

नवाब किया.....किया.....तो आपका नंबर लग गया पहले तीन में ?

तुक्कू जी हों आलाहजरत, मैं दूसरे नंबर पर कामयाब हुआ हूँ ।

नवाब मुबारक हो आपको आलिमों और अफसरों से इन से मिलिये....ये हाल ही में आला अफसरों के इम्तिहान में नम्बर दो पर कामयाब हुए हैं....आप लोग इन्हें अपने अपने मसल बतलाये, ये उन मसलों को चुटकी बजाते ही हल कर देंगे ।

तुक्कू बिल्कुल बिल्कुल ।

आलिम गन्ने की मिठास की वजह से जंगली हाथी मैदानी इलाकों की सारी की सारी फसलों को उजाड़ देते हैं ।

तुक्कू अरे तो क्या मुश्किल है । किसानों से कहिये कि गन्ने के साथ साथ करेलो को भी उगाये ।

सब वाह वाह ।

नवाब वाह वाह, जानदार । शानदार । अगला मसला बताये ।

आलिम हमारी रियासत का सारा का सारा पानी नदियों के जरिये बहकर दूसरी रियासतों में चला जाता है जिसकी वजह से हमारे यहाँ पानी की कमी पड़ जाती है । अब बांध वगैरह बनाने में तो बड़ा पैसा खर्च होगा ....बताईए पानी को कैसे रोका जाये ?

तुक्कू बहुत आसान मसला है । रियासत का सारा का सारा पानी जो बहकर दूसरी रियासतों में चला जाता है, उस का बर्फ जमवा दीजिये और जब जरूरत हो गलवा गलवा कर काम ले लें ।

नवाब वाह वाह, जानदार । शानदार । थानदार । मकानदार । दूसरा मसला बताये ।

आलिम जनाब अकाल की वजह से खाने को नहीं है और रियाया खाने को रोटी मांग रही है ।

तुक्कू और रोट है नहीं, अरे इसका हल तो पहले वाले मसले से भी आसान है । अरे आप उनसे कहें कि वो रोटी की जगह पुलाव खायें, बिरयानी खायें....मुर्गमुसल्लम खायें ।

नवाब वाह जनाब वाह....शानदार । थानदार । मकानदार । किरायेदार । एकदम भिन्नाट । सड़क सपाट आलिमों से यूँ ही चुटकी बजाकर हल कर डालेंगे । तुक्कू मियां हम आप से बहुत खुश हुये । हम आप को अपना खास सलाहकार बनाते हैं ।

दरबान अब दरबार बरखास्त किया जाता है ।

कोरस छैल छबीला सुल्तान म्हारा,  
चाल चले मतवाला,  
ढोलक चाल बदल के....आ...आ...

नवाब तुक्कू से आप कल शाम ही हमारे यहाँ खाने पर तशरीफ लायें ।

तुक्कू बहुत बहुत शुक्रिया बड़ी मेहरबानी ।

नवाब आप आ ही जाइयेगा ।

तुक्कू जी बेशक ।

नवाब का प्रस्थान ।

- तुक्कू आलिमों से मियाँ नवाब साहब ने हमें दावत पर बुलाया है, आप लोग अपनी औकात में रह कर बात करना ।
- तुक्कू मियाँ का प्रस्थान उनके पीछे पीछे सभी आलिम भी नवाब से इजाजत लेकर जाते हैं । सभी आलिम मरकज में आते हैं । उनके पीछे बूढ़ा आलिम भी आता है ।
- सभी बूढ़े मिया ।
- आलिम 1 बता दे ।
- सभी बता ही दो ।
- आलिम 1 मैंने कहा सलाम जनाब सलाम
- बूढ़ा मियाँ अस्सलावालेकुम कहने में क्या आपकी जबान अटकती है ।
- आलिम रियासत ने अपने हर काम में बचत करने का फैसला किया है, लिहाजा हमने भी आधे सलाम से काम चलाना शुरू कर दिया ।
- बूढ़ा बेहूदा बातों के लिए मेरे पास वक्त नहीं है जनाब । कहिये ।
- आलिम 1 बता दे ।
- सभी बता ही दो ।
- आलिम 1 बता दे ।
- बूढ़ा कोई खास बात है, जल्दी कह डालिये मुझे फुरसत नहीं है ।
- आलिम 2 खबर जानियेगा तो फुरसत भी निकल आयेगी ।
- बूढ़ा अब बोलियेगा भी...क्यों वक्त खराब कर रहे हैं ।
- आलिम-1 आप नवाब साहब के खौफ से दरबार में तो गये नहीं ... और जिन मसलों को आप हम नहीं सुलझा पाये उन्हें तुक्कू मियाँ ने यूँ हल कर डाला
- बूढ़ा कौन तुक्कू ?
- आलिम-2 अरे वो ही जो आला अफसरों के इम्तिहान में दूसरे नंबर पर आये थे.... उन्होंने किस खूबसूरती से सारे मसले हल कर दिये...**फाईल देते हैं**
- बूढ़ा **फाईल देख कर तो**
- आलिम बता दे ।
- सभी बता ही दो
- आलिम-2 नवाब साहब ने उनकी कबालियत से मुत्तासिर होकर उन्हें अपना खास सलाहकार बनाया है ।
- आलिम 3 और तो और उन्हें अपने यहाँ दावत पर भी बुलाया है ।
- बूढ़ा लाहौलविलाकुव्वत । आप लोग होश में तो हैं ।
- सभी होश में हैं, तभी तो कह रहे हैं ।
- आलिम 1 मियाँ बुजूर्गवार, नवाब साहब ने कहलवाया है कि उन्हें एक काबिल आदमी की ज़रूरत है ।
- बूढ़ा तो आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं ।
- आलिम 2 हम लोग चाहते हैं कि तुक्कू मियाँ एक आलिम फाजिल ओर समझदार हैं ।
- आलिम 3 इसलिये हम सब ने मिल कर तय किया है कि
- आलिम 4 क्यों न नवाब साहब को एक दरखासत दा कर उनसे इत्तिजा की जाये, और तुक्कू मियाँ को सभी मरकजों का हेड मुकर्रर करा दिया जायें ।
- बूढ़ा तो आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं ।
- सभी हम लोग तो इतना चाहते हैं कि हम लोगों ने मिलकर जो यह दरखास्त तैयार की है, उस पर आप अपने खुशखत से दस्तखत कर दे, बस ।
- बूढ़ा **चिढ़कर अरे मियाँ छोड़िये**

सभी अरे सुनिये न ।  
 बूढ़ा छोड़िये न ।  
 पार्श्व बूढ़े मियों ।

**बूढ़ा का प्रस्थान** । एक आलिम लम्बा सा स्कूल लेकर आता है कुछ इबारत लिखता है बारी बारी से सभी दस्तखत बनाते हैं सब प्रस्थान करते हैं ।

आलिम 1 अरे बुजुर्गवार तो चले गये । तो आप सभी साहेबान राजी है ? लिजिये दरखास्त और कीजिये दस्तखत ।

आलिम 2 यह मेरे ।

आलिम 3 यह मेरे ।

**मसखरे का प्रवेश**

मसखरा मियों यह आप लोग क्या कर रहे हैं ?

आलिम हम लोगों ने मिल कर यह जो दरखास्त तैयार की है, इसको नवाब साहब के पास जल्दी से पहुँचा दीजिये ।

मसखरा ठीक है । जाता है । फिर वापस आकर आला हजरत ने आज जब तुक्कू मियम को दावत पर बुलाया तो आप सभी के चेहरे लटक गये थे । तो मैंने नवाब साहब से कहा कि क्यों न इन लटके हुए चेहरों को भी दावत पर बुला लें । तो नवाब साहब ने हमारे कहने पर आप सभी लटके चेहरों को दावत पर बुलाया है । इसलिए आज शाम आप सभी महल में तशरीफ लें आयें अपनी अपनी थाली लेकर ।

सभी शुक्रिया जनाब शुक्रिया ।

**सभी बाहर जाते हैं । मसखरा दर्शकों से**

मसखरा तो जनाब अदबी मरकज की यह खास मीटिंग बरखास्त की जाती है आप सभी साहेबान आये इसके लिए शुक्रिया । अरे अरे आप लोगों को जाने को नहीं कहा है । अभी तो नाटक बहुत बचा है, बैठिये । **ऐलान करते हुए** गौर करे जनाब आला हजरत ने हमारे अदबी मरकज के सभी अफसरों की राय से यह फैसला किया है कि जनाब तुक्कू मियों को हमारे मरकज का हेड मुकर्रर किया जाता है । और इसके साथ ही यह भी फैसला किया गया है कि जनाब तुक्कू मियों की देखरेख में अदब और फन के लिए एक खास महकमा भी कायम किया जायेगा । इसके साथ ही जनाब तुक्कू मियों नवाब साहब के खास सलाहकार भी रहेंगे ...

**सहज भाव** तो हो गया बेड़ा गर्क...हालांकि ये जनाब भी दूसरों की तरह से चुगद रखे हैं । मैं तो पहली मुलाकात में ही ताड़ गया था कि मियां एक नंबर के जाहिल और बेवकूफ हैं लेकिन कम से कम उन पढ़े लिखे अदीबों से तो ठीक है जिनका दिमाक अब बजाये अदब की खिदमत करने के रियासती खिदमत और अवाम की मरम्मत में ज्यादा तेज चलता है । खैर कुछ भी कहें । बंदे का मुकददर बलन्द है लेकिन कभी कभी रंग बदल लेता है गिरगिट की तरह अब देखिये हमी ने इसे इम्तहान में बिठवाया और नवाब साहब ने इसे इम्तहान में शामिल करवाया, हमी तो गये थे इम्तहान में बिठवाने, इम्तहान लेने वाले समझते कि मियां नवाब साहब के खासमखास हैं, उन्होंने कर दिया पास । इधर नवाब साहब समझी कि मियां वाकई तालीमयाफता और अक्लमंद हैं । तो बना दिया सदर मरकज इसको कहते हैं तुक्का एक अंगूठा टेक । बन गये अदबी मरकज के हेड...वो देखिये सामने से चले आ रहे तुक्कू मियां ।

तुक्कू मियां पहचाना आपने...वो वाले तुक्कू मियां नहीं बल्कि टी यू के के यू तुक्कू धाकड़े । अब आप लोगों को तो मालूम ही है कि नवाब साहब ने हमें दावत पर बुलाया वहाँ पहुँचा तो देखा कि ढेर सारे मसले पड़े हुए हैं । सारे अफसरान हैरान परेशान बैठे हैं । मैंने सारे मसले यूँ चुटकी बजाते ही हल कर डालें एक अहम मसला था नवाब साहब बोले कि सारी रियासत की हरियाली खत्म होती जा रही है । दरख्त काटे जा रहे हैं मैंने बोल दिया कि सारी रियासत को हरे रंग से रंगवा दीजिये चारों तरफ हरियाली ही हरियाली नजर आयेगी...फिर क्या था नवाब नवाब साहब बहुत खुश हुई और उन्होंने मुझे सदरे मरकज बना दिया अब सदर ए

- मरकज बनने के बाद अवाम का ख्याल तो रखना ही पड़ता है और अवाम आम तौर से पटिये पर रहती है तो हम पैदल ही चलते हैं ।
- मसखरा अरे हुजूर मैं तो आपको कब से ढूँढ़ रहा हूँ...यह उतारिये टोपी दिखा कर कहता है अब तो आप सदर ए मरकज बन गये हैं उसे छोड़िये और इसे पहनिये ।
- दृश्य परिवर्तन होता है धीरे धीरे प्रकाश आता है कुछ मनचले आते हैं**
- मनचले तुक्कू मियां ओ, तुक्कू मियां हो  
कहाँ छिपे हो, कहाँ छिपे हो  
तुक्कू मियां ओ, तुक्कू मियां हो  
कहाँ छिपे हो, कहाँ छिपे हो
- तुक्कू मियां कौन लफंगे हैं, इस तरह क्यों चिल्ला रहे हैं । इन्हें बता दो कि यह गांव की सड़कें नहीं बल्कि राजधानी की सड़कें हैं ।
- मसखरा हुजूर खुद ही बता दे तो बेहतर होगा ।
- तुक्कू अच्छा
- मसखरा अब देखिये कि बर्फ कहाँ गिरती है ।
- तुक्कू काश्मीर में
- मसखरा और सरदी कहाँ पड़ती है
- तुक्कू यहीं राजधानी में ।
- मसखरा तो बस आप ही कह दें ।
- तुक्कू उनके पास जाकर खामाशें हो जाओ बेशउरों ।
- मनचले अबे कौन है बे डंडे लेकर पीछे पलटते हैं । तुक्कू गिर कर बेहोश हो जाता है मसखरा भीड़ में से रेंगता हुआ आता है क्यों बे तूने देखा है कहीं हमारे तुक्कू मियां को ।
- मसखरा कौन तुक्कू ।
- मनचले कंचे खेलने में माहिर, पतंग उड़ाने में उस्ताद, एक नंबर के पहलवान ।
- मनचले 2 पस्ता कद
- मनचला 3 महाफितने ।
- मसखरा चुगद से लगते हैं । सब सिर हिलाते हैं । अरे वो तो पिछले चौराहे पर बेहोश पड़े है ।
- मनचले तुक्कू के पास जाकर उठाते हैं...मियां आप ने हमें पहचाना नहीं ।
- तुक्कू अरे कौन लोग है आप ।
- मनचले अरे हम हैं आपके छर्रे,
- तुक्कू यह भी कोई मिलने का ढंग है पहले से इत्तिला देनी चाहिए थी आप लोगों को....मैं कोई आपकी तरह फालतू आदमी तो हूँ नहीं.....
- मनचले आश्चर्य से क्या कहा आपने ?
- मनचला 1 मियां आप हमारी तौहीन कर रहे हैं....
- मनचला 2 आपसे ये उम्मीद न थी कि इतनी जल्दी आपके दिमाग सातवें आसमान पर पहुँच जायेंगे ।
- मनचला 3 मियां आप तो एकदम फन्ने खां बने हुए हैं ।
- मनचला 4 ऐसी भी क्या मसरूफियत है यार कि दोस्तों को पानी का भी न पूछा
- तुक्कू मियाँ जरा इनको गांव का रास्ता तो बता दीजियेगा । हमें दरबार में जाना है ।
- गाना बना है शाह का मुसाहिब,  
बना है शाह का मुसाहिब, फिरे है इतराता ।  
बना है शाह का मुसाहिब,

बना है शाह का मुसाहिब, फिरे है इतराता ।  
 वरना इस रियासत में ऐ तुक्कू, हों तुक्कु  
 वरना इस रियासत में ऐ तुक्कू, हों तुक्कु, तेरी औकात क्या है ।  
 तेरी औकात क्या है । तेरी औकात क्या है ।  
 तेरी औकात क्या है । तेरी औकात क्या है ।  
 नाक का मैं बाल हूँ दरबार का ।  
 खास से भी खास हूँ सरकार का ।  
 नाक का मैं बाल हूँ दरबार का ।  
 खास से भी खास हूँ सरकार का ।  
 तेरी औकात क्या है । तेरी औकात क्या है ।  
 तेरी औकात क्या है । तेरी औकात क्या है ।  
 जानते है हम तेरे सारे फसाने को  
 जानते है हम तेरे सारे फसाने को  
 रोज जाता है दरबार में तू  
 जानते है हम तेरे सारे फसाने को  
 तबला बजाने को, तबला बजाने को ।  
 तबला बजाने को, तबला बजाने को ।  
 तुक्कू अरे मियाँ मिरासी होंगे, तुम्हारे बाप दादे ।  
 मनचला मियाँ बाप दादो तक मत पहुँचना । समझे ।  
**मसखरा मनचलों के पास जाता है और उन्हें बाहर की तरफ धकेलता है**  
 मनचले अबे ओ झाड़ू के बिखरे हुए तिनके, हम मेमने का शिकार नहीं करते । जा पहले अपनी अम्मां  
 से अपना दूध माफ करा आ ।  
 मसखरा क्या कहा ।  
 मनचला छोटू...लगे तो एक फूंक इसके...  
**छोटू फूंक मारता है...मसखरा तुक्कू मियाँ के पास जाकर गिरता है...तुक्कू खुद भगाने जाता है...छोटू**  
**फिर फूंक मारता है तुक्कू वहीं खड़ा मुस्कुराता रहता है ।**  
 तुक्कू सब मिल कर कोशिश कर लो ।  
**सब मिल कर फूंक मारते हैं । तुक्कू फिर भी वहीं खड़ा रहाता है ।**  
 तुक्कू ऐसे नहीं मियाँ ऐसे तुक्कू खुद फूंक मारता है । सब मनचले मंच के बाहर जा कर गिरते हैं ।  
**अकादमी के अफसर एक दूसरे के पाँव पकड़ कर आपस में बतियाते हैं ।**  
 आलिम 1 यह मीटिंग क्यों बुलाई गई है ?  
 आलिम 2 अरे नये हेड बने है, तुक्कु मियाँ तो मीटिंग तो होना ही थी ।  
 तुक्कु कहाँ चल दिये आप लोग ?  
 सभी टिंग, टिंग, टिंग ।  
 तुक्कू हमने हरे रंग से हरियाली लाई है, यही टिंग टिंग कर लेते है । आज की मीटिंग एक खास  
 मकसद से बुलाई गई है ।  
 आलिम कोई गुस्ताखी हुआर ?  
 तुक्कू तो बात यह है कि हमने नवाब साहब से मुलाकात की । रियासत में बलवाईयों की  
 कारगुजारियों को मददेनजर रखते हुए आज से दो दिन बाद हमारे आला हजरत की  
 सालगिरह मनाने का फैसला किया गया है....इसी सिलसिले में....

दो पर जनाब  
 एक सालगिरह तो अगले महीने पड़ती है आला हजरत की....  
 दो हों अगले महीने....  
 तुक्कू वो मैं जानता हूँ...पर इस बात पर कोई बहस की गुजांइश नहीं है....आला हजरत की सालगिरह दो दिन बाद मनाई जाना है और हर बार से भी बेहतर ढंग से इस बार...जलसा होना है....आप लोग तय कर लें कि किस किस को कौन सा तोहफा देना है और उसकी एक लिस्ट भी बना दें.

तीन पर हुजूर पर जनाब.....  
 तुक्कू आप लोगों को जनता के अलग अलग तबकों से बातचीत करना है । और उन्हें यह बताना है कि वो कौन कौन सा तोहफा नवाब साहब को देंगे ।  
 सभी जिन्दाबाद । जिन्दाबाद ।  
 तुक्कू नारे लगाने में ताकत जाया मत कीजिये । नारे लगाने का वक्त भी आने वाला है ।  
 दो यानि तोहफे भी हम तय करेंगे....ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ जनाब ।  
 तुक्कू पेले क्या हुआ है और क्या नहीं हुआ है । इसे भूल जाइये और बैठ जाइये ।  
 तीन बहुत बेहतर है...बुरा न माने तो पूछ सकता हूँ कि जनाब आप कौन सा तोहफा देने वाले है .....  
 तुक्कू सबसे पहले आप अपने आप से अपनी औकात पूछिये । किससे बात कर रहे है ?  
 बूढ़ा एक कोई नायाब चीज होगी....  
 तुक्कू यह मैं अभी आपको नहीं बता सकता... आप लोग जब तक बाकी काम कर लें, मैं हाजिर होता हूँ । तुक्कू बाहर जाता है तभी एक काल्पनिक पेड़ से टकराने का अभिनय करता है । कयाँ मियाँ यह किसके महकमें से ताल्लुक रखता है.....एक अफसर आगे आता है । लम्बु मिया अब यह दरख्त यहां नहीं दिखना चाहिये नहीं तो हम आपको छोट देंगे ।

आलिम ठीक है जनाब ।  
 चार यह बात तो हमारे समझ नहीं आयी मियाँ कि लोगों को यह भी बताया जाये कि उन्हें क्या तोहफा देना है ।  
 एक बहुत कुछ सोच कर ही यह फैसला लिया गया होगा....  
 चार यह आपके तुक्कू मियाँ तो अपनी समझ में नहीं आये मियाँ....  
 एक मियाँ हमारे ही है आपके नहीं है ....  
 चार अरे मियाँ आप तो जबान पकड़ते हैं ।  
 एक चलिये छोड़ देते है.....  
 दो हों हों कतरने की तरह चलाइए....  
 तीन जनाब कुछ औरतों के लिए भी छोड़ दीजिएगा ....कहेंगी कि हम एक काम तो सलीक से करते थे इसे भी मरदुए करने लगेँ....  
 दो पर जनाब एक बात तो ये है कि हमने आज तलक तुक्कू मियाँ को कभी हाथ से कोई काम करते नहीं देखा,  
 चार हमें तो याद नहीं पड़ता कि कभी उनने एक लाइन भी अपने हाथ से लिखी हो  
 तीन बड़े अफसर की काबलियत जनाब काम करने में नहीं काम करवाने में है  
 तीन पर कमाल है साहब कभी इस रियासत में पेले किसी को ऐसी तरक्की मिली हो याद नहीं आता ।  
 एक कोई खास बात होगी तभी तो....  
 बूढ़ा कद्र उल्लू की उल्लू जानता है, हुमा को कब चुगद पहचानता है ?  
 हड़बड़ाते हुए तुक्कू का प्रवेश । सअ आलिम अपने एक एक हाथ से दूसरे के पोंव को पकड़े है ।

- तुक्कू क्यों मियां यह क्या हो रहा है ।
- आलिम गुफतगू
- तुक्कू बहुत ही घटिया तरीका है गुफतगू का । तो जनाब आप लोगों ने सारी बातें समझ ली हैं न अब आप लोग काम में लग जाइये....ये मीटिंग बर्खास्त की जाती है, आप लोग आये इसके लिए शुक्रिया । जाने के लिए मुड़ता है....फिर दरख्त के साथ टकराने का अभिनय करता है क्यों मियां यह अभी तलक यही है....ठीक है हम ही इसका इन्तज़ाम करते हैं । उसे उखाड़ने कर अभिनय करता है कुछ अफसर नीचे दब जाते हैं । कुछ अफसर उसे उस में से गिरे फल तोड़ तोड़ कर अपने मूंडे में रखने लगते हैं....वो बारी बारी से सबके पास जाता है । सब कहते हैं हो जायेगा.. ..जनाब कर डालें...आप बेफिक्र रहे....आखिर में बूढ़े के पास जाता है...क्यों मियां आप भी यही काम करते हैं ।
- बूढ़ा जी जनाब ।
- तुक्कू तो आप भी लग जाइये काम पर ।
- बूढ़ा इस उम्र में....ठीक है जनाब ।
- तुक्कू बूढ़े मियां इधर आईए बैठिये ।
- बूढ़े हुजूर मैं कैसे बैठ सकता हूँ आप बैठिये ।
- तुक्कू डौंटते हुए हमने कहा न आप बैठिये बूढ़ा बैठ जाता है । हाँ तो कल नवाब साहब की सालगिरह मनाई जायेगी इसलिए हम नवाब साहब को एक बढ़िया सा कसीदा देंगे ।
- बूढ़ा बहुत खूब....बहुत खूब...बढ़िया कसीदा लिखूंगा ।
- तुक्कू हम चाहते हैं कि नवाब साहब की सालगिरह पर आप अपने खुशख्त से एक बढ़िया कसीदा लिख दीजिये ।
- बूढ़ा मैं ?
- तुक्कू तो मैं ?
- बूढ़े ठीक है । आप बेफिक्र रहे....यह काम में जरूर कर दूंगा ।
- तुक्कू स्कूल देता है तुक्कू और मसखरे का प्रस्थान**
- बूढ़ा मुझे तो पहले से ही शुबहा था पर इसे यकीन में बदलने का कोई रास्ता न था । पर लगता है कि मेरा शुब्हा बिल्कुल सही था कि ये जनाब कुछ लिखना पढ़ना जानते नहीं है....आज मौका है कि ऐसा कसीदा लिखूंगा कि दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा ।
- नवाब की सालगिरह का दृश्य तुक्कू का प्रवेश**
- तुक्कू क्या मियां यह क्या कर रहे हैं आप नवाब साहब की सालगिरह है और आप....
- मसखरा मैं नवाब साहब की सालगिरह पर गाने बजाने वालों को कुछ सिखा रहा था...
- तुक्कू कहीं ऐसा न हो कि नवाब साहब आप लोगों का बाजा बजा दे । कहाँ है सब काम करने वाले जिन्हें बुलाने के लिये आप से कहा गया था ।
- मसखरा तेज आवाज में अरे आओ भाईयों आओ.....जनाब ये सब बेरोजगार हैं....काम भी करेंगे और पैसे भी नहीं लेंगे ।
- तुक्कू हूँ बहुत बढ़िया...लेकिन मियां आप लोगों ने अपने चेहरे क्यों लटका रखे हैं । ऐसा लग रहा है कि जैसे नवाब साहब की सालगिरह में नहीं बल्कि उनकी मौत का मातम मनाने आये हैं.... थोड़ा मुस्कुराईये....सब मुस्कुराते हैं....कित्ता अच्छा लग रहा है तो ऐसा करे कि रियासत की दीवारों को हरे रंग से रंग दे ताकि सब जगह हरियाली ही हरियाली नजर आये, और रियासत के जितने भी कौबे हैं उन्हें सफेद रंग में रंग दे ताकि वो हंस की चाल चलते हुए नजर आये । रियासत की जितनी भी गरीब ओर मजलूम रियाया है उन्हें आज अपने अपने घरों से न निकलने दिया जाये । उनके घरों में ताले डाल दीजिये....अगर लाठियों की जरूरत पड़े तो वो हमसे ले लीजिएगा । ताकि अवाम में चैन और अमन नजर आये । अब आप लोग अपनी

गरदने ही हिलाते रहेंगे या कुछ काम भी करेंगे.....तो लग जाईये अपने अपने काम में....जाईए ...  
अरे बूढ़े मियां कहां है....उन्हें बुला कर लाईये ।

बूढ़ा आगे आकर जी हुजूर

तुककू हमने आपको जो कसीदा तैयार करने के लिये वो पूरा हो गया ।

बूढ़ा जी जनाब लिख लिया....आप इसे पढ़ लें जनाब और इसमें कुछ जोड़ना घटाना हो तो बता दें ।  
तुककू नहीं ठीक है ।

बूढ़ा फिर भी देख लेते, इमले की गल्लिया हो तो बता दें ।

तुककू अरे बुजूर्गवार...आपने लिखा है तो ठीक ही लिखा होगा ठीक है जाईये...हॉ जरा सुनिये....वो  
हमने आप को नवाब साहब की शान में एक धुन बनाने को कहा था उसका क्या हुआ जनाब ।

बूढ़ा उसे धुन में पिरो दिया है । आप सुन लीजिये । हॉ तो सुनाईये ।

**सब लोग बैठकर कर गाना सुनते हैं**

जलवा है मेरी जान नवाब की सालगिरह

तुककू बीच में गाना रोक कर खाईये ये पान, ये लाईन आप लोग भी गाईये । आप लोग यहां क्यों  
आये हैं...गाना भी गाना है । चलिये गाईये....आपको काम के साथ साथ गाने के भी पैसे दिये  
जायेंगे ।

गाना लंगूर के हाथ में जाम नवाब की सालगिरह ।

तुककू रुकिये रुकिये...यह वहीं लंगूर है न जो दरख्तों पर उछल कूद करते हैं बूढ़े मियां इधर आईये  
आप....आप के पैर तो कब्र में लटके हुए हैं । हमारे सामने तो सारी जिन्दगी पड़ी है । आपने  
नवाब साहब की सालगिरह में सारे लंगूरों को जाम पकड़ा दिये ।

बूढ़े हुजूर चारों तरफ इतनी खुशी है कि लंगूरों के हाथ में जाम है ।

तुककू वाह मियां वाह क्या कहा आपने

लंगूर के हाथ में जाम नवाब की सालगिरह का

कौव्वे की चोंच में पान नवाब की सालगिरह का

उल्लू के मुंह में आम नवाब की सालगिरह का

आज हमारी जबान से निकला हर लफज नज्म बनता जा रहा है ...मियां जरा इसे भी धुन में  
पिरो दीजिये ।

गाना बलवा है मेरी जान नवाब की सालगिरह का

हलवा है मेरी जान नवाब की सालगिरह का

तुककू मसखरा उसे हलवा लाकर देता...वाह मियां क्या बात है । नज्म में भी हलवा और खाने में भी  
हलवा । मियां लेकिन जरा सुर को पकड़ कर रखिये । आपका सुर जरा फिसल जाता है ।

गायक जी जनाब शुकिया वो क्या है कि जरा सा सुर बहक गया था ।

तुककू देखा हम सुर के बारे में भी कितना जानते हैं....अब गाइये ।

गाना हलवा हैं मेरी जान नवाब की सालगिरह का

अब खाइये ये पान नवाब की सालगिरह का

मसखरा हड़बड़ाहट में दौड़ता हुआ आता है . नवाब साहब आ रहे हैं हुजूर

तुककू नवाब साहब आ गये । तोहफे कहां है । जरा जल्दी जल्दी लाना मियां उन्हें ।

**सब तोहफे लेकर इधर उधर दौड़ते हैं । नवाब साहब का प्रवेश.**

नवाब कमाल है....कमाल है....वाह भाई कमाल है....तुककू मियां कमाल है....ऐसी सालगिरह हमारी पहले  
कभी नहीं मनी ।

तुककू तब हम नहीं थे न आला हजरत ।



- नवाब हमारी तो क्या हमारे बाप दादों की भी नहीं मनी....एक कमाल थे पाशा तुर्क एक कमाल है हम.  
...एक कमाल हैं आप....वाह क्या टीम है ।
- तुक्कू आला हजरत आप तशरीफ रखिये । हॉ भई तोहफे लाओ जरा जल्दी जल्दी  
**सब बारी बारी से तोहफे लाते हैं**
- नवाब वाह इतने सारे तोहफे हमारी रियाया हमसे कितनी मोहब्बत करती है न तुक्कू मियां...देखा  
आपने ।
- तुक्कू जी हां आला हजरत बेपनाह मोहब्बत करती है आपसे ।
- बूढ़ा नवाब साहब एक बेशकीमती तोहफा तो रह ही गया ।
- नवाब किसने नहीं दिया हमें तोहफा ? हम उसका सर कलम करवा देंगे ।
- बूढ़ा तुक्कू मियां का नायाब तोहफा तो रह ही गया ।
- नवाब अरे तुक्कू मियां, हां आपने तो हमें तोहफा दिया ही नहीं ।
- तुक्कू आला हजरत हम आपकी शान में एक नायाब कसीदा लिख कर लाये हैं इसे पढ़ लें ।
- नवाब मसखरे इसे टंगवा दो । हम इसे पढ़ेंगे । **पढ़ने का अभिनय करता है** । तुक्कू मियां हम इसे  
कैसे पढ़ेंगे । हमारी सालगिरह और हम ही कसीदा पढ़ें ।
- तुक्कू लगता है कि इनकी हालत हम से ज्यादा बदतर है ।
- बूढ़े नवाब साहब तो क्या हुआ । तुक्कू मियां अपना लिखा कसीदा खुद
- तुक्कू वो क्या है । आला हजरत कि मैं आपकी सालगिरह के जलसे में इतना मसरूफ रहा कि मैं  
दो दिन से सोया भी नहीं । मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा है....आप कहाँ है ।
- नवाब जब हम नहीं पढ़ेंगे, आप नहीं पढ़ेंगे तो कौन पढ़ेगा ?
- तुक्कू आला हजरत हमारा काम है लिखना और अवाम का काम है पढ़ना....अब आपने दूसरी  
रियासतों से पैसा ले लेकर अवाम की पढ़ाई लिखाई पर जो खर्च किया है देखते हैं कि उससे  
कितना फायदा हुआ है....हम आपको एक और तोहफा देते हैं ।
- नवाब एक और तोहफा ।
- तुक्कू जी हॉ आला हजरत हम इसे कसीदे को धुन में पिरो देते हैं....मियां जरा इसे धुन में पिरो कर  
सुनाईये तो
- गाना आप जन्नत की हूर हैं  
लोगों की आँख का नूर हैं  
जबकि हकीकत यह है कि  
**बाहर से....मारो मारो ...का शोर सुनाई देता है....नवाब के साथ सब लोग इधर उधर दौड़ते हैं ।**
- नवाब ये शोर कैसा हो रहा है....हमारा बहुत दिल घबराता है शोर से....सालगिरह के दिन भी इस  
तरह का शोर ।
- बूढ़ा ये लोग तो आपकी सालगिरह से खुश होकर शोर मचा रहे हैं । आप तो कसीदा सुन ले ....  
आपका दिल बहल जायेगा ।
- तुक्कू जी आला हजरत सालगिरह पर तो अवाम खुशी से पागल हो गया है....आप तो कसीदा सुन ले  
हॉ मियां कसीदा....सुनाना जरा
- गाना आप जन्नत की हूर है  
लोगों की आँख का नूर  
जबकि हकीकत यह है कि....
- नेपथ्य से फिर से शोर की आवाजें आती है....नवाब तेरी रियासत की तोपों में हम आग लगा देंगे ।

नवाब **इधर उधर दौड़ते हुए** ये क्या बात हुई कि हमारी रियासत की तोपों में यह लोग आग लगा देंगे । अरे तोपें हमने रियासत की हिफाजत के लिये दूसरी रियासतों से मंगाई है । तोपो क्या इनके बाप की हैं जो ये आग लगा देंगे....

बूढ़ा अरे आप तो कसीदा सुन ले....यह शोर तो अभी बंद हो जायेगा ।

गाना आप जन्नत की हूर हैं  
लोगों की आंखों का नूर हैं  
जबकि हकीकत ये है कि....

इस पंक्ति के मध्य ही बलवाई अंदर दाखिल हो जाते हैं । सभी लोग भाग जाते हैं । नवाब कसीदे को अपने उपर ढक लेता है । बलवाई देख लेते हैं । वो कसीदे को बाहर फेंक देते हैं और नवाब को उठा कर ले जाते हैं । सिपाही तुक्कू...तुक्कू मियां को पकड़ों, भागने न पावे के शोर में मंच पर छिपते हुए प्रवेश करते हैं और एक कोने में दुबक कर बैठ जाते हैं । तभी मसखरा अंदर आता है उसके लिये भी शोर मचता है....मसखरे को पकड़ो, भागने न पाये....तुक्कू और मसखरे आपस में टकरा जाते हैं

तुक्कू मियां हमने कुछ नहीं किया हमने कुछ नहीं किया ।

मसखरा अरे आप जिन्दा हैं ।  
तभी कुछ सिपाही भागते हुए आते हैं । दोनों छिपकर भागते हैं । सिपाही आकर पकड़ लेते हैं ।

सिपाही चलिये तुक्कू मियां ...नये नवाब जनाब जबरदस्ती ने आपको याद फरमाया है

तुक्कू मियां हमने कुछ नहीं किया

सिपाही ये लो इन्होंने कुछ नहीं किया...अरे आपने जो कसीदा लिखा था वो नवाब साहब ने पढ़ लिया है...आपको चलना ही पड़ेगा...चलिये ।

तुक्कू **मसखरे से** चलो मियां लटक जाते हैं चल कर फांसी से

नेपथ्य से नवाब नवाब खामखा की हुकूमत पलट दी गई....नवाब खामखा गिरफ्तार कर लिये गये हैं और उनकी जगह आला हजरत....जनाब जबरदस्ती ने हुकूमत संभाल ली है । नवाब जबरदस्ती....खबरदार....खबरदार....पहरेदार....सूबेदार....आलाअफसर...शामिल दफतर....अख्तर बख्तर सारे नशतर....खबरदार...हमारे नये आलीजा...नये नवाब...आलाहजरत...जनाब...जबरदस्ती...तशरीफ ला रहे हैं....

गाना लो आ गये नवाब, लो आ गये नवाब  
धरती की आन बान के  
आसमां की शान के

नवाब अबे कौन आ गये

गाना लो आ गये नवाब, लो ओ गये नवाब  
इस नई दुकान के  
आपने दिलो जान के

नवाब कौन आ गये

गाना लो आ गये नवाब, लो आ गये नवाब

नवाब जमीन आ गई

नया मसखरा जी हुजूर

नवाब देखा हमने तख्त पलट दिया, क्या पलट दिया ?

न. मसखरा तख्त पलट दिया हुजूर ने....

नवाब कहां तख्ता तो ज्यों का त्यों है....तख्त पलट जायेगा तो हम कहाँ बैठेंगे....तुम बेवकूफ हो....क्या हो ?

न. मसखरा बेवकूफ जनाब....

- नवाब जनाब नहीं...तुम बेवकूफ हो...खैर जाने दो.... हमने हुक्म दिया था कि पिछले नवाब के सारे खास आदमियों को जेल में डाल दो...
- न. मसखरा सबको डाल दिया हुआ, बस एक जनाब बचे हैं ।
- न. मसखरा जनाब तुक्कू मियां हैं, जो नवाब साहब के खास सलाहकार और अदबी गरकज के हेड मुकरर किये गये थे ।
- नवाब उन्हें गोली से...नहीं तोप से उड़ा दो ?
- न. मसखरा जनाब एक बात अर्ज करूं ? हुआ एक बार उस कसीदे को देख लेते जो तुक्कू मियां ने पिछले नवाब साहब के सालगिरह पर दिया था ।
- नवाब क्यों क्या बात है ?
- न. मसखरा हुआ हजाजत हो तो पढ़ कर सुनाऊं...आवाज लगाकर तुक्कू मियां को हाजिर किया जाये तुक्कू मियां सिपाही के साथ अंदर आते हैं नवाब उनका पूरा मुआयना करता है...सर को ठीक कर देखता है
- नवाब ये कौन है बे
- न. मसखरा तुक्कू
- नवाब तुक तुक तुक...ही तो तुक्कू मियां वो क्या लिखा था आपने ।
- तुक्कू जनाब हमने कुछ भी नहीं लिखा था....हम सच्ची कर रहे हैं ।
- नवाब ये कह रहें हैं कि इन्होंने कुछ भी नहीं लिखा था । कहां है वो कसीदा, क्यों बे कहां है वो कसीदा ।
- मातहत बारी बारी से एक दूसरे से कर आखिर वाला नवाब से पूछता है
- न. मसखरा क्यों कहों है वो कसीदा...जी जनाब ये रहा ।
- नवाब इसे पढ़ कर सुनाया जाये
- गाना आप जन्नत की हूर है  
लोगों की आंखों का नूर है  
जबकि हकीकत यह है कि  
आप जाहिल और बेशउर हैं
- तुक्कू **स्वगत** ओह तो बूढ़े मियां ने यह कसीदा हमें लिख कर दिया था....देख लिया आप लोगों ने इस अदीबों की हरकत...अरे किसी मुशायरे में कोई शायर अच्छा सा कलाम पढ़ दे तो चेहरे लटक जाते हैं दूसरे शायरों के ...और उधर क्रिकेट के मैदान में कोई गेंदबाज बल्लेबाज की गिल्लियां बिखेर दे तो सब के सब उसे कंधे पर बिठा लेते हैं...अरे जलकुक्ड़े होते हैं यह अदीब और शायर...तो मियां यहां भी अपनी किस्मत साथ दे गई वरना अपना तो आज काम लग गया थ । **प्रकट** हां मियां जरा आगे पढ़ना ।
- गाना इसलिये आपका तख्त दलदल में धंसने वाला है
- नवाब क्या कहा बे...हमारा तख्त जल्दी ही दलदल में धंसने वाला है...
- तुक्कू नहीं जनाब...आपका नहीं...आपके बारे में नहीं वो तो पिछली नवाब नवाब के बारे में लिखा है... **स्वगत** वैसे तख्त तो आपका भी धंसने वाला है **प्रकट** आप तो कसीदा सुनिये यह हमने आपके लिये अपनी जान पर खेल कर लिखा है ।
- गाना यही दुनियां का दस्तूर है
- नवाब वाह तुक्कू मियां क्या कसीदा लिखा है ।
- बूढ़ा जनाब वो कसीदा तो मैंने लिखा हैं ।
- मसखरा जी हां जनाब ये सही कह रहे हैं...पर जैसा तुक्कू मियां ने बताया था, इन्होंने वैसा लिखा है
- नवाब वाह जनाब तुक्कू मियां आपने क्या कसीदा लिखा है...तशरीफ रखिये ।
- तुक्कू कहां

नवाब सिंहासन की तरफ इशारा करके तुक्कू बैठ जाता है अबे उठाओ मातहत सिंहासन को मंच के मध्य लाते है तुक्कू मियां हमने सुना है कि आपने पुरानी नवाब नवाब खामां खा के यहां बड़े से बड़े मसले हल कर दिये यहां भी एक मसला पड़ा है हल होने को ।

तुक्कू मसले तो हम बचपन से ही हल करते आ रहे हैं ।

नवाब तुक्कू मियां हमने सोचा है कि चांद को जमीन पर उतारा जाये ।

तुक्कू जनाब आप एक चांद को जमीन पर उतारने की बात कर रहे हैं हम तो सैंकड़ों चांद आपको नजर कर दें मसखरे जरा इधर आना न मसखरा आता है तुक्कू उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बस जरूरत है एक उस्तरे की चांद ही चांद नजर आयेंगे नये मसखरे की विग हटा देता है ।

नवाब वाह वाह तुक्कू मियां हम आपसे बहुत खुश हुए....हमने आपको तीन दे दी

तुक्कू मसखरे के पास जाकर लगता है तीन बार फांसी पर लटकवायेगा ।

नवाब हमने आपको एक साथ तीन तरक्कियां दे दी सभी लोग तुक्कू को मुबारक बाद देते हैं । शुक्रिया हुजूर शुक्रिया ।

तुक्कू पर हुजूर मेरी एक गुजारिश है कि हमारी तरक्की में से आधी तरक्की हमारे मसखरे को भी दे दी जाये ।

नवाब ठीक है, तीन की आधी दो ।

तुक्कू स्वगत लगता है मियां बिल्कुल सही जगह पर पहुंच गये है, तीन की आधी दो

नवाब वाह वाह तुक्कू मियां हम आपसे बहुत खुश हुए । हमने आपको दे दी

तुक्कू स्वगत देखा कैसे टेसू जैसा अड़ा हुआ है ।

नवाब वाह तुक्कू मियां क्या दिल पाया है आपने । कितने रहमदिल इंसान हैं आप और क्या कसीदा लिखा था आपने जनाब । हमने आपको अपनी सल्तनत दे दी । सब तुक्कू को मुबारकबाद देते हैं अब इस मसखरे और बूढ़े मियां का क्या करना हैं, यह आप ही जानिये ।

तुक्कू सुनिये बूढ़े मियां । आप हमारे अब्बू के बराबर हैं इसलिये हम आपको माफ करते हैं । आईन्दा से ख्याल रखियेगा । नवाब से जनाब इन्हें हम अपना सदर ए मरकज बनाते हैं ।

सब बूढ़े मियां को मुबारकबाद देते हैं

बूढ़ा स्वगत तुक्कू मियां तो बहुत रहमदिल और नेक इंसान हैं, मैं उन्हें दूसरों अफसरों की तरह ही गलत समझ रहा था । एक अफसर के लिये पढ़ा लिखा होना जरूरी नहीं बल्कि उसे एक अच्छा इंसान होना जरूरी है ।

तुक्कू और इस मसखरे को जनाब हम अपना खास सलाहकार बनाते हैं ।

सब मसखरे को मुबारकबाद देते हैं

मसखरा दर्शकों से तो देख लिया आप लोगों ने चल गया तुक्का...नवाब से इधर आईये । आपने अपनी सल्तनत तुक्कू मियां को दे दी अब आपके पास क्या बचा ।

नवाब कुछ भी नहीं ।

मसखरा तो इसे पकड़ो चिमटा पकड़ कर और निकल जाओ दरिया किनारे । नवाब जाने लगता है, उसे रोक कर अरे कहां चले? चलिये लाईन में लगिये...एक्जिट कौन करायेगा....

सब मंच पर से निकल कर जाते हैं और पुनः मंच पर आकर तिर्यक रेखा में खड़े होते है

गाना लो बन गये नवाब, लो बन गये नवाब ।

लो बन गये नवाब, लो बन गये नवाब

चल गया रे चल गया, एक तुक्का चल गया  
तीर सारे रह रह गये, एक तुक्का चल गया ।।

समाप्त